02

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई

भारत की वीरांगना

एक ऐसी वीरांगना जिसने अंग्रेजों के सामने सिर झुकाने से बेहतर समझा—लड़ते-लड़ते मर जाना

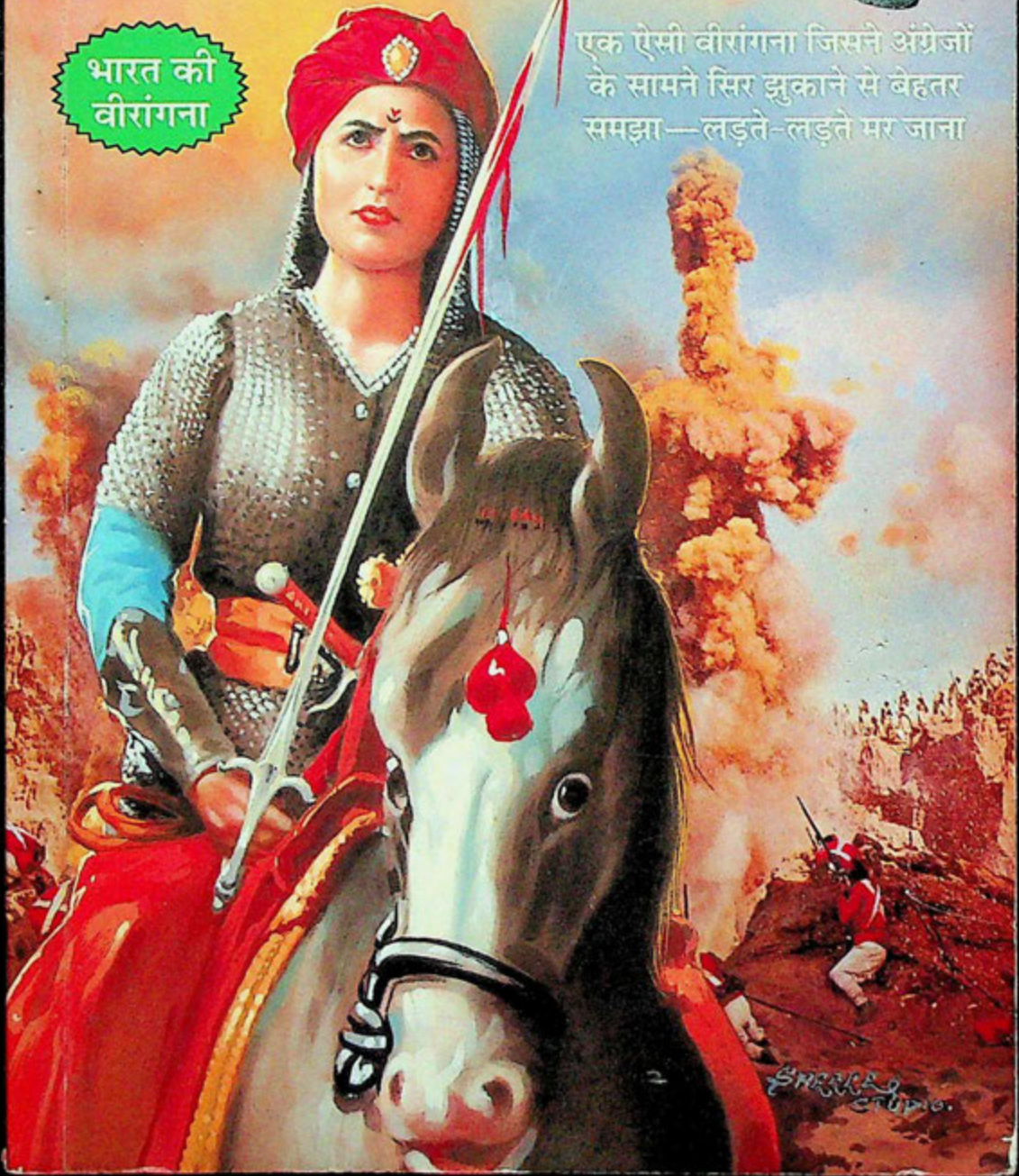

९३७७

झांसीकीरानी लक्ष्मीबाई

गाथा एक ऐसी वीरांगना की, जिसकी तेजधार तलवार ने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए

मनोज पब्लिकेशन्स

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रकाशक :

मनोज पब्लिकेशन्स

761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084

फोन : 27611116, 27611349 फैक्स : 27611546

मोबाइल : 9868112194

ईमेल : info@manojpublications.com

वेबसाइट : www.manojpublications.com

शोरूम :

मनोज पब्लिकेशन्स

1583-84, दरीबा कलां, चांदनी चौक, दिल्ली-6

फोन : 23262174, 23268216, मोबाइल : 9818753569

भारतीय कॉपीराइट एक्ट के अंतर्गत इस पुस्तक की सामग्री तथा रेखाचित्रों के अधिकार 'मनोज पब्लिकेशन्स, 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-84' के पास सुरक्षित हैं, इसलिए कोई भी सज्जन इस पुस्तक का नाम, टाइटल-डिजाइन, अंदर का मैटर व चित्र आदि आंशिक या पूर्ण रूप से तोड़-मरोड़कर एवं किसी भी भाषा में छापने व प्रकाशित करने का साहस न करें, अन्यथा कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे व हानि के जिम्मेदार वे स्वयं होंगे।

किसी भी प्रकार के वाद-विवाद का न्यायक्षेत्र दिल्ली ही रहेगा।

ISBN : 978-81-8133-610-1

चतुर्थ संस्करण : 2010

40/-

मुद्रक :

जय माया ऑफसेट

झिलमिल इण्डस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-110095

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई : *विनोद तिवारी*

प्रकाशकीय

देश के लिए कुर्बान होने वालों के लिए उसके दिल में खास जगह थी। अपनी गुप्तचर मोतीबाई की शहादत पर वह फूट-फूटकर रोई थी। अपने दुश्मन, अंग्रेजों से वह कितनी नफरत करती थी इसका अंदाजा सरदार रघुनाथ को कहे गए शब्दों से साफ लगता है—'किसी हाल में (अंग्रेज) हमारे शव को न छूने पाएं।' और ऐसा हुआ भी। महारानी झांसी, लक्ष्मीबाई के शरीर को अंग्रेज छू न सके।

अंग्रेजों के लिए महारानी की नफरत उनकी नीयत को लेकर थी। झांसी को हड़पने के लिए अंग्रेजों ने सभी हथकंडे अपनाए। महारानी ने उन्हें आगाह करते हुए कहा—"झांसी हमारी शान है। मैं जीते जी झांसी को दुश्मनों के हवाले नहीं कर सकती।"

झांसी को अंग्रेजों की गिरफ्त से बचाने के लिए महारानी लक्ष्मीबाई ने अपनी ओर से कोई कसर न छोड़ी। घर के भेदी यदि दुश्मन का साथ न देते तो झांसी को कोई छू नहीं सकता था। आखिर महारानी को अपनी प्यारी झांसी का त्याग करना पड़ा। वह शहीद हो गई।

आज की नारी शक्ति के लिए प्रेरणा स्रोत है महारानी लक्ष्मीबाई का जीवन।

लेखक ने कथानक को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए बीच-बीच में कल्पना का भी सहारा लिया है, इसलिए इसकी घटनाओं को 'इतिहास' के संदर्भ में न देखें। यदि कहीं कोई सुधार अपेक्षित हो तो अवश्य सूचित करें। आपके पत्रों का स्वागत है।

□□

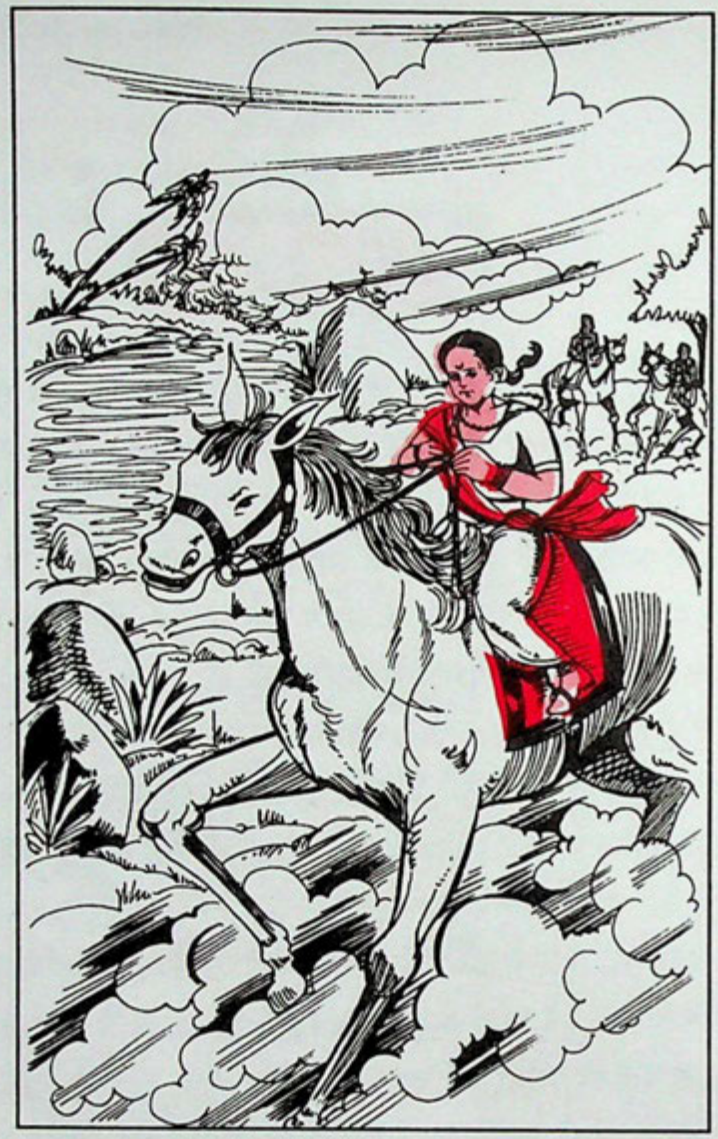

मनु था उसका नाम। प्यार से लोग उसे छबीली भी कहते थे। उसे गुड़िया से खेलना अच्छा नहीं लगता था, वह तो खेलती थी बरछी, तीर और भालों से। घोड़े की जब वह सवारी करती तो बड़ों-बड़ों को पीछे छोड़ देती ।

ज्योतिषियों ने बताया कि मनु को राजयोग है। उनकी भविष्यवाणी सही निकली। वह झांसी की महारानी बनी। ऐसी महारानी जिसने झांसी की आन पर अपने मरते दम तक आंच नहीं आने दी।

खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झांसी वाली रानी थी

एक ऐसी वीरागंना थी लक्ष्मीबाई, जिसके जुझारूपन पर उसके दुश्मन भी कुर्बान थे। जिसने सिद्ध कर दिखाया था कि अबला कही जाने वाली नारी में बला का बल छिपा होता है। वह यदि रति है तो रणचंडी भी।

ब्रिटिश जनरल सर ह्यूरोज के शब्दों में—"विप्लवकारियों की सबसे बहादुर और सबसे महान सेनापति रानी थी वह।"

ह्यूरोज का लक्ष्मीबाई से सामना एक बार नहीं कई बार हुआ था।

लक्ष्मीबाई महारानियों की तरह आदेश देना ही नहीं जानती थीं, वह खुद लड़ाई के अग्रिम मोर्चों पर युद्ध करतीं। यही कारण था जो उनके सैनिक ऐसा काम कर जाते, जिनकी कि कभी कोई कल्पना तक नहीं कर सकता। डाकू सागर सिंह को पकड़ना ऐसे ही कारनामे की मिसाल है। उससे भी बढ़कर सागर सिंह का महारानी झांसी के प्रति हृदय से समर्पित हो जाना लक्ष्मीबाई के व्यक्तित्व की गरिमा का बखान करता है।

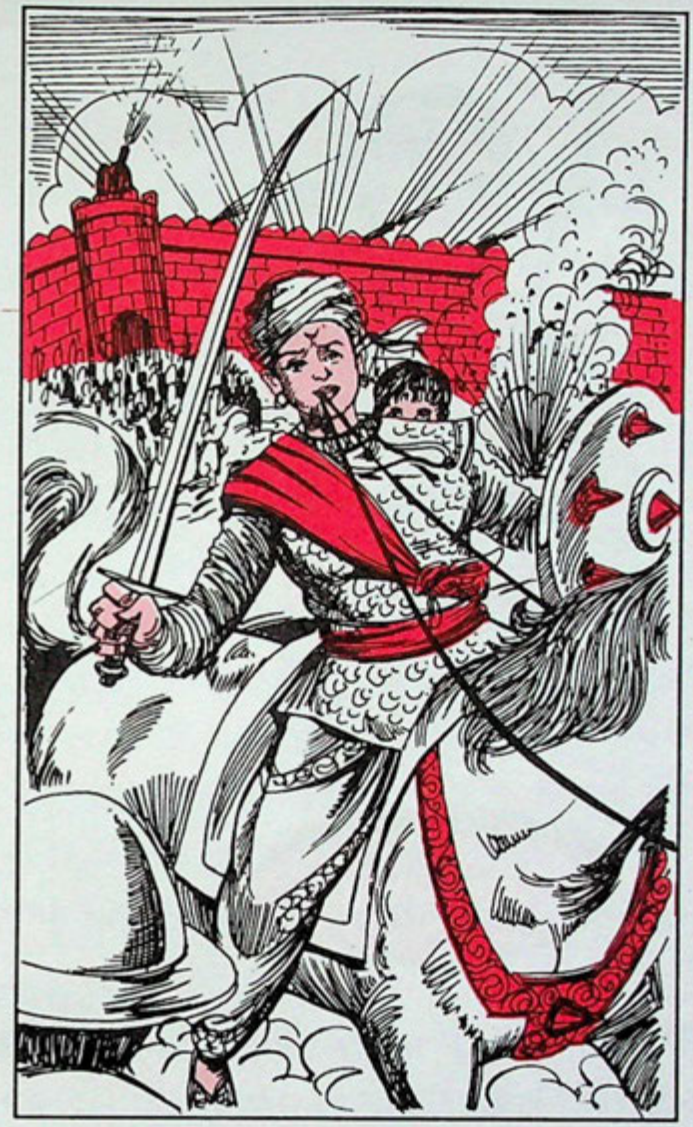

आखिरी लड़ाई : इस युद्ध के बाद महारानी ने वीरगति प्राप्त की थी

सखियों ने महारानी का आखिरी सांस तक साथ दिया। काश! कोई घर का भेदी न होता। भीतरघात के कारण महारानी को पराजय का मुंह देखना पड़ा।

महारानी झांसी का जब देहावसान हुआ तब उनकी आयु थी— 22 वर्ष और 7 माह।

अनुक्रम

- बाल्यावस्था 9
- विवाह 17
- पुत्ररत्न की प्राप्ति 26
- महारानी की जासूस सहेलियां 43
- स्वराज्य के लिए लड़ाई की तैयारियां 53
- युद्ध की जोरदार शुरुआत 60
- नत्थे खां का झांसी पर आक्रमण 74
- रानी जब वीरगति को प्राप्त हुईं 91

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई

महाराष्ट्र के डिस्ट्रिक्ट (जिला) सतारा के अन्तर्गत बाई नामक गांव में कृष्णराव ताम्बे का परिवार रहता था। ताम्बे के पुत्र का नाम बलवंत राव था। सन् 1817 में कृष्णराव पेशवा राज्य के बहुत बड़े अधिकारी थे। उनके पुत्र बलवंतराव भी पेशवा की सेना के उच्च पद पर आसीन थे। बलवंत राव के दो पुत्र थे, जिनका नाम मोरोपंत और सदाशिव था। ये दोनों पेशवा के पूना दरबार में नियुक्त थे।

सन् 1818 में अंग्रेजों ने पेशवा को पूना से हटाना चाहा। इसलिए अंग्रेजों ने पेशवा बाजीराव को पेंशन के रूप में लाखों रुपये और बिठूर की जागीर देने की बात कही। इस पर बाजीराव तैयार हो गए। वे पूना छोड़कर बिठूर चले आए। जबकि उनके भाई चिमणजी काशी आ गए। चिमणजी, मोरोपंत पर हमेशा कृपा दृष्टि रखते थे। इसलिए मोरोपंत भी काशी आकर उनका काम-काज देखने लगे।

बाल्यावस्था

सन् 1835 की बात है। नवम्बर का महीना था। इस महीने की उन्नीस तारीख को मोरोपंत की पत्नी भागीरथी बाई ने एक बालिका को जन्म दिया। बालिका देखने में बहुत सुन्दर थी। उसके मुखमंडल पर एक अजीब-सा तेज दिखाई पड़ रहा था। वह अपनी माता के समान ही सुन्दर थी। विशाल भाल और बड़ी-बड़ी आंखें। बालिका, जिसे प्यार से मनु कहकर पुकारा जाता था, का लालन-पालन बड़े लाड़-प्यार से होता रहा। दिन महीनों में परिवर्तित होते रहे और महीने सालों में। इसी बीच मनु चार वर्ष की हो गई। तभी ईश्वर ने उसके सर

से मां का साया छीन लिया। भागीरथी बाई चल बसीं। मोरोपंत पत्नी की मृत्यु के शोक में डूब गए। यह खबर जब बिठूर में बाजीराव को मिली तो उन्होंने मोरोपंत को अपने पास बुला लिया।

बिठूर में मोरोपंत पेशवा बाजीराव की कृपा के तले अपनी बेटी मनु का लालन-पालन करते रहे। वे अपनी बेटी को अत्यधिक प्यार करते थे और प्यार से उसे छबीली कहकर बुलाते थे।

पेशवा बाजीराव नि:संतान थे। वे जब-जब मनु को देखते, तब-तब उन्हें एक संतान की कमी महसूस होती थी। इसलिए उन्होंने एक बालक को गोद ले लिया। उस बालक का नाम नाना साहब था। बालक नाना के दो भाई और थे—बालाराव और राव साहब। नाना और राव साहब मनु के साथ खेलते-कूदते थे। तीनों एक साथ पढ़ाई भी करते थे। उन्होंने घुड़सवारी करना, बंदूक और तलवार चलाना साथ-साथ सीखा था। लेकिन मनु का दिमाग उन दोनों से बहुत तेज था। वह जिद्दी भी थी। उसे लड़कियों का साथ बहुत कम मिला था, इसलिए उसमें स्त्रियोचित गुणों का विकास होने के बजाय पुरुषोचित गुणों का अधिक विकास हुआ। इसलिए वह शर्म-संकोच से बहुत दूर हो गई थी। उसके विचार उसे दिन-प्रतिदिन एक नई प्रेरणा प्रदान करते थे। एक बार मनु बिठूर में गंगा नदी के किनारे घुड़सवारी कर रही थी। उसके पीछे दो और घुड़सवार भी अपने घोड़े को सरपट दौड़ाए चले आ रहे थे। देखते ही देखते दोनों ने मनु को पीछे छोड़ दिया। फिर मनु ने जोश में आकर अपने घोड़े को एड़ लगाते हुए कहा—"तुमने मुझे चुनौती दी है। देखती हूं मैं—कौन आगे होता है।"

उस समय मनु ग्यारह वर्ष की थी, जबकि वे दोनों मनु से आयु में कई वर्ष बड़े थे। मनु ने अपने अदम्य साहस का परिचय देते हुए दोनों अश्वारोहियों को पीछे छोड़ दिया। नाना ने मनु को पुन: पीछे

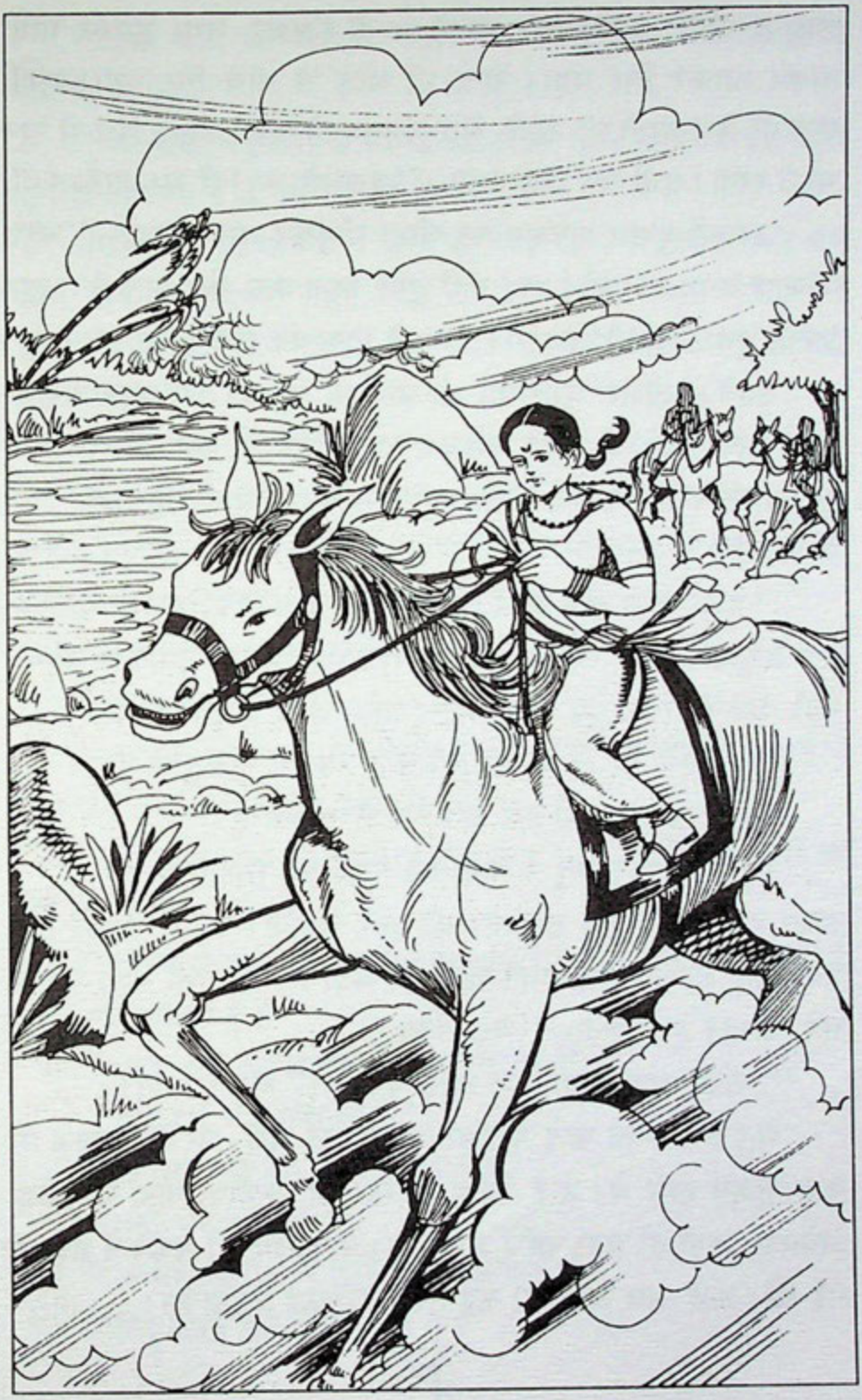

छोड़ना चाहा। इसके लिए उसने जल्दी दिखाई, मगर उसका घोड़ा ठोकर खाकर गिर पड़ा। नाना भी घोड़े से नीचे गिर पड़ा। सूखी लकड़ी से टकराने पर उसके सिर में घाव हो गया। उसके सिर से खून बहने लगा। तभी वह चिल्लाया—"बचाओ मनु! मैं मर जाऊंगा।"

उसकी पुकार सुनकर मनु घोड़ा मोड़कर वापस आई—"बहुत जांबाज बनते हो। कोई बात नहीं तुम्हें बहुत कम चोट आई है। बहुत जल्दी तुम ठीक हो जाओगे।" मनु ने नाना का घाव देखते हुए कहा।

इतने में तीसरा घुड़सवार भी वहां आ पहुंचा। उस घुड़सवार का नाम तात्या था। जो आगे चलकर तात्या टोपे के नाम से लोकप्रिय हुआ। उसने नाना का घाव देखते हुए कहा—"तुझे तो बहुत चोट लगी है नाना।"

"कहां बहुत चोट लगी है।" मनु ने बीच में ही उसकी बात को काटते हुए कहा—"मैं इसे घर ले चलती हूं। घर पर इसकी मरहम-पट्टी करूंगी, फिर तुम देखना नाना बहुत जल्द दौड़ने लगेगा।"

"तुम इसे घर ले जाओगी कैसे?" तात्या ने मनु से पूछा।

"तू देखता रह, मैं इसे कैसे घर ले चलती हूं।"

इतना कहकर मनु ने नाना को उठने का संकेत किया। नाना ने उठते हुए अपना एक हाथ उसकी ओर बढ़ाया। मनु ने उसका हाथ पकड़कर खींचते हुए अपने घोड़े पर बैठा लिया। तभी नाना दर्द के मारे चीखते हुए बोला—"मेरा घोड़ा?"

"घोड़ा अपने स्थान पर चला गया है।" मनु ने कहा।

मनु उसे अपने घोड़े पर बिठाकर घर ले आई। घर के दरवाजे पर कुछ बुजुर्ग खड़े थे। उन्हें चिंता हो रही थी, क्योंकि नाना का घोड़ा अकेला पहले ही वहां पहुंच चुका था। बाजीराव की धड़कनें तेज हो गई थीं। उन्हें अब आंख से बहुत कम दिखाई पड़ता था।

''अभी घोड़े पर बैठकर यहां कौन आया है?'' बाजीराव ने मोरोपंत से पूछा।

''मेरी बेटी मनु आई है महाराज। उसके साथ नाना भी हैं। दोनों खून से लथपथ हैं।'' मोरोपंत ने जवाब दिया।

उसी समय सिपाहियों ने नाना को घोड़े से नीचे उतारा, फिर मनु स्वयं घोड़े से कूदकर अपने पिता की ओर बढ़ी। पिता मोरोपंत ने अपनी बच्ची को गले लगाते हुए कहा—''कहां चोट आई है मेरी बच्ची को?''

''चोट नाना को लगी है, मुझे नहीं।'' मनु बोली।

नाना के सिर में मरहम-पट्टी की गई। बाजीराव उसके घायल होने को लेकर बहुत चिंतित थे। अगले दिन मनु जब सोकर उठी तो वह सबसे पहले नाना को देखने गई।

''अब तुम्हारा दर्द कैसा है?'' मनु ने नाना के बालों पर अपना हाथ फेरते हुए कहा।

''दर्द तो बहुत कम हो गया है, लेकिन मुझे रात को ठीक तरह से नींद नहीं आई।'' नाना ने उत्तर दिया।

''मेरे साथ शाम को घूमने चलोगे क्या? अंधेरा होने से पहले घर आ जाएंगे।''

''चलने से मना नहीं कर सकता। पर घुड़सवारी करने से मेरा दर्द और बढ़ सकता है।''

''कुछ नहीं बढ़ेगा। बोलो—घूमने चलोगे?''

''यदि दर्द बढ़ गया तो?''

''तो क्या तुम दर्द सह नहीं सकते?''

''नहीं सह सकता।''

''अच्छा चलो—मैं तुम्हें लड्डू खिलाऊंगी।''

''लड्डू खाने की इच्छा नहीं है।''

''फिर क्या खाओगे ?''

''कुछ नहीं। मुझे बिस्तर पर पड़ा रहने दो।''

''बिस्तर पर कब तक पड़े रहोगे।''

''देखो मनु—मुझे अब गुस्सा आ रहा है। तुम मेरा दिमाग और ज्यादा खराब मत करो।''

''नाना क्या तुम वह बात भूल गए? जब तुम कहते थे कि मैं योद्धाओं की तरह यश प्राप्त करूंगा।''

तभी उन दोनों के सामने बाजीराव का आगमन हुआ। मनु उन्हें दादाजी कहकर बुलाती थी। वे मनु की बातें सुन चुके थे।

''देखो नाना—दादाजी आ गए।'' मनु बोली।

''मनु, तू अपनी चपलता से कब बाज आएगी। अब तू बहुत बोलने लगी है।'' बाजीराव ने कहा।

''क्या करूं दादाजी।'' मनु अपने होंठों को चबाते हुए बोली—

''एक तो नाना दर्द के मारे वैसे ही परेशान है। दूजे तू उसे चिढ़ा रही है। तू पढ़-लिख लिया कर।''

इतने में मोरोपंत वहां आकर बोले—''महाराज, हाथी तैयार खड़ा है। नाना साहब को थोड़ा घूम आने दीजिए।''

''नाना हाथी पर बैठेगा तो उसकी चोट का दर्द बढ़ जाएगा।'' बाजीराव ने कहा।

''नहीं महाराज! मैंने नाना साहब के आराम के लिए पालकी में मखमल का तकिया लगा दिया है। इन्हें कोई कष्ट न होगा।''

''फिर तुम नाना को घूमने के लिए भेज सकते हो।''

महाराज का आदेश पाकर नाना को हाथी पर सवार किया गया, मनु भी दौड़ी-दौड़ी हाथी के पास आई, किंतु नाना बिना उसे हाथी पर बैठाए ही घूमने निकल पड़ा।

''काका, काका, हाथी को वापस बुलाइए न। मैं भी उस पर

बैठकर घूमने जाऊंगी।'' मनु ने अपने पिता मोरोपंत से कहा।

''हाथी तो जा चुका है बेटी।'' मोरोपंत ने कहा।

''आप चाहें तो उसे वापस बुला सकते हैं काका।''

''बेटी! हम कोई सामंत-सरदार नहीं हैं। राजा-महाराजा नहीं हैं। हमारे भाग्य में हाथी पर बैठना नहीं लिखा है। तुम पढ़ी-लिखी हो। बात को समझा करो। हर जगह जिद अच्छी नहीं होती।'' मोरोपंत ने मनु को समझाया।

''कैसी बातें करते हैं काका। मेरे भाग्य में एक नहीं दस-दस हाथी लिखे हैं।''

''तू सच कह रही है क्या?''

''जी काका। अब मैं घोड़े पर बैठकर नाना के हाथी का पीछा करती हूं। उसके बाद उसे परेशान भी करूंगी।''

''किसी को परेशान करना अच्छी बात नहीं है बेटी।''

''तो मैं बंदूक से निशाना साधूंगी।''

बेटी की बात पर मोरोपंत सहमत हो गए। मनु बंदूक लेकर घर से बाहर आ गई और निशाना साधने लगी। कुछ देर बाद उसे हाथी के घंटे की आवाज सुनाई पड़ी। फिर उसने बंदूक को एक जगह पर रख दिया। अब वह दौड़ती हुई हाथी के पास आई। नाना हाथी से नीचे उतर रहा था। उसने नीचे उतरकर मनु को चिढ़ाते हुए कहा—''छबीली, तू पढ़ाई कर रही थी क्या?''

''खबरदार जो मुझे छबीली कहा?'' मनु ने नाक सिकोड़कर कहा।

''बुरा मत मानो मनु। ये तो तुम्हारे बचपन का नाम है। आज जब मेरे सिर का दर्द ठीक हो गया तो तुम्हारा ये नाम मेरी जुबान पर आ गया।'' नाना ने कहा।

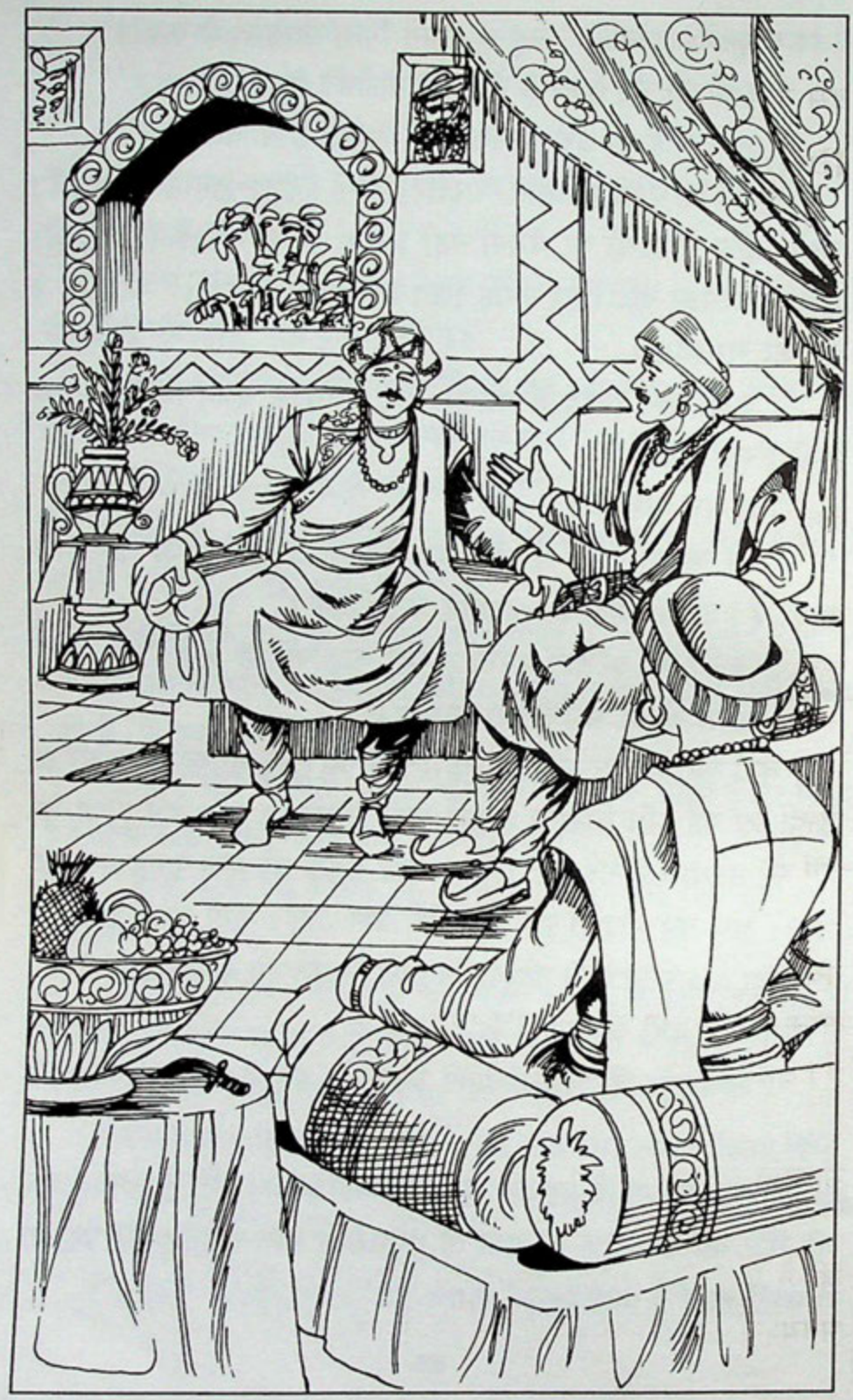

''नाना! आज के बाद तुम कभी मुझे छबीली मत कहना। मुझे इस नाम से सख्त नफरत है।''

विवाह

मनु अब विवाह करने योग्य हो गई थी। मोरोपंत उसके लिए वर की खोज करते-करते थक गए, लेकिन उन्हें अपनी लड़की के सुयोग्य कोई वर नहीं मिला। इसी बीच झांसी से तात्या दीक्षित शास्त्री का बिठूर में आगमन हुआ। शास्त्री जी ज्योतिष विद्या में बहुत निपुण माने जाते थे। उन्होंने बाजीराव और मोरोपंत से कुछ देर तक वार्तालाप किया। उसके बाद मोरोपंत ने मौका पाकर अपनी कन्या के विवाह की बात उनसे छेड़ दी।

''शास्त्री जी। मुझे मनु के लिए कोई योग्य वर नहीं मिल रहा है। आप इसके लिए कोई योग्य वर बतलाने की कृपा करें।'' मोरोपंत ने कहा।

तभी बीच में बाजीराव बोल पड़े—''शास्त्री जी। कन्या की सुन्दरता बेमिसाल है। उसकी बुद्धिमत्ता का कोई जवाब नहीं। उसे हिन्दी-संस्कृत और मराठी भाषाओं का बहुत अच्छा ज्ञान है। कन्या धर्म में अटूट श्रद्धा रखती है।''

''मेरी मनु जब चार वर्ष की थी, तभी उसकी मां का निधन हो गया था।'' मोरोपंत ने कहा—''मैंने और महाराज ने उसे पाल-पोसकर इतना बड़ा किया है। वह घुड़सवारी में पुरुषों को भी पीछे छोड़ देती है। वह हथियार चलाने में भी बहुत दक्ष है।''

''आप अपनी कन्या की जन्मपत्री दिखा दीजिए।'' शास्त्री जी ने मोरोपंत से कहा।

मोरोपंत जल्दी से अंदर जाकर मनु की जन्मपत्री ले आए। शास्त्री जी ने उसकी जन्मपत्री देखते हुए कहा—''आपकी कन्या तो बड़ी भाग्यशालिनी है। इसके रानी बनने के योग हैं।''

इतने में मनु उनके सामने आकर खड़ी हो गई। शास्त्री जी को उसका मुखमंडल देखकर बड़ी खुशी हुई। उन्होंने ऐसी कन्या अन्यत्र कहीं नहीं देखी थी।

''मैंने सुना है कि तुमने शास्त्रों का भली-भांति अध्ययन किया हुआ है।'' शास्त्री जी ने मनु से कहा।

''शास्त्र से अधिक आनंद मुझे तुलसीकृत रामायण पढ़ने में आता है। इसके अलावा मैं घुड़सवारी और निशानेबाजी भी अच्छी तरह से कर लेती हूं।'' मनु ने कहा।

यह सुनकर शास्त्री जी मोरोपंत की ओर देखते हुए बोले—''यह बात एक दिन आपके सामने आएगी कि आपकी कन्या किसी राज्य की रानी बनेगी।''

उन्होंने बाजीराव और मोरोपंत से एकांत में बातचीत की।

''मुझे झांसी के महाराज गंगाधर राव ने कन्या की खोज में भेजा है। वे विधुर हो गए हैं। उनके कोई संतान नहीं है। इसलिए वे पुन: विवाह करना चाहते हैं।'' शास्त्री जी ने अपने मन की बात बताई।

''आप उनसे मनु का जिक्र अवश्य करना।'' मोरोपंत ने निवेदन करते हुए कहा।

''मैं यहां से झांसी महाराज के पास जाऊंगा। उनसे बातचीत करने के बाद मैं आपको सारी बात स्पष्ट रूप से बता दूंगा।''

शास्त्री जी ने झांसी पहुंचकर महाराज गंगाधर राव से भेंट की। उन्होंने महाराज और मनु की जन्मपत्री का मिलान किया। दोनों की जन्मपत्रियां मेल खा गईं।

महाराज ने प्रसन्न होकर मनु से विवाह करना स्वीकार कर लिया। यह शुभ सूचना लेकर शास्त्री जी वापस बिठूर आए। मोरोपंत को जब पता चला कि महाराज गंगाधर राव मनु से विवाह करने को राजी हो गए हैं, तो वे खुशी से उछल पड़े। बिठूर में सगाई की तैयारियां होने

लगीं। मनु को हीरे-मोतियों के आभूषणों से सजाया गया। वह सज-संवरकर दुर्गा की तरह दिखाई पड़ रही थी। उसकी सगाई बड़ी धूमधाम से की गई।

''मनु अब तो तुम झांसी की रानी बनने वाली हो। रानी बनने के बाद क्या तुम हाथी पर बैठकर बिठूर आओगी।'' नाना ने पूछा।

''जी हां, एक हाथी पर मैं बैठूंगी और मेरे पीछे दस हाथियों पर मेरी सेनाएं होंगी।'' मनु ने उत्तर दिया।

''लेकिन तुझे तो घुड़सवारी ज्यादा पंसद है। तुम चाहो तो दिल्ली पर धावा बोल सकती हो।''

''दिल्ली में क्या रखा है नाना।''

''वहां अंग्रेजों का राज है।''

''लेकिन अंग्रेज परास्त भी किए जा सकते हैं।''

''छबीली, तू फिर अपनी शेखी बघारने लगी।''

''तुमने फिर मुझे छबीली कहा।''

''अच्छा, अब आगे कभी नहीं कहूंगा। अब तो मैं तुम्हें झांसी की रानी कहकर बुलाऊंगा।''

यह सुनकर मनु मुस्कराने लगी।

मनु का विवाह झांसी में होना निश्चित हुआ था। यह भी निश्चित किया गया था कि मोरोपंत झांसी में रहेंगे। विवाह के व्यय का सारा दायित्व गंगाधर राव अपने ऊपर ले चुके थे। विवाह की तिथि के पहले ही मोरोपंत मनु को लेकर झांसी पहुंच गए। उनके साथ बिठूर के कुछ और लोग भी झांसी आए थे। यहां विवाह की तैयारियां बड़े जोर-शोर से हो रही थीं।

झांसी में भगवान गणेशजी का एक प्राचीन मंदिर है। इसी मन्दिर में महाराज गंगाधर राव और मनु का विवाह होना था। महाराज पूजा करने के लिए घोड़े पर बैठकर गणेश मंदिर में आए। इस मंदिर के

करीब एक भवन में मोरोपंत अपनी बेटी मनु को लेकर ठहरे हुए थे। मनु ने भवन की खिड़की से महाराज को मंदिर में देखा। महाराज की उम्र बहुत अधिक लग रही थी, लेकिन उनके मुख की बनावट बड़ी आकर्षक थी। उनकी लाल-लाल आंखें बड़ी भयानक लग रही थीं। उनका शरीर बड़ा मजबूत था पर तोंद निकली हुई थी। मनु ने उन पर एक सरसरी निगाह दौड़ाई। उसके बाद उसका ध्यान महाराज के घोड़े पर लग गया। घोड़े के आस-पास कई लड़कियां खड़ी थीं। वे मन्दिर में पूजन के गीत गाने आई थीं। महाराज पूजन के बाद अपने घोड़े पर बैठकर महल की ओर जाने लगे। प्रजा उनके रास्ते में खड़ी होकर आदरपूर्वक शीश झुका रही थी। महाराज उनका प्रणाम स्वीकार करके महल की ओर बढ़े चले जा रहे थे। मनु उन्हें खिड़की से एकटक देख रही थी। तभी उसके पास एक मराठी कन्या आई। कन्या ने बड़े आदरपूर्वक मनु को प्रणाम किया।

''आपका परिचय?'' मनु ने उस कन्या से पूछा।

''मेरा नाम सुन्दर है। महाराज ने मुझे आपकी दासी के रूप में यहां भेजा है।'' कन्या ने जवाब दिया।

''मैं कोई दासी नहीं रखना चाहती।'' मनु ने कहा।

''आप महारानी हैं, इसलिए मैं आपकी सेवा करना चाहती हूं।''

''मेरी सेवा तुम सखी-सहेली बनकर कर सकती हो, लेकिन दासी बनकर नहीं।''

''जैसी आपकी आज्ञा महारानी।''

''तुम घुड़सवारी जानती हो क्या?''

''बहुत कम महारानी। मैं दौड़ना खूब जानती हूं। कोसों दौड़ने के बाद भी मेरी सांस नहीं फूलती।''

''क्या तुमने कभी निशानेबाजी भी की है?''

''जी नहीं महारानी।''

महाराज की सवारी अब काफी आगे निकल गई थी। दो लड़कियां और मनु के पास आईं। दोनों ने मनु के चरणों में झुककर प्रणाम किया।

''महारानी! ये बड़े कद वाली मुंदर है और छोटे कद वाली काशी है।'' सुंदर ने उन दोनों का परिचय दिया।

ये दोनों लड़कियां नाच-गाना करना चाहती थीं। मनु का आदेश पाकर दोनों अपने खास अंदाज में नृत्य और गीत प्रस्तुत करने लगीं। इससे मनु का चेहरा खुशी से और दमकने लगा। मनु ने मुस्कराते हुए दोनों लड़कियों से कहा—''तुम्हें घुड़सवारी और हथियार चलाने का प्रशिक्षण भली-भांति दिया जाएगा।''

यह सुनकर दोनों लड़कियों का उत्साह और अधिक बढ़ गया। कई लड़कियां मनु का स्वागत करने के लिए फूल-मालाएं लेकर आईं। मनु ने उनका अभिवादन स्वीकार किया और उन्हें गणेश मन्दिर में कार्यक्रम की जानकारी लेने के लिए भेजा। अब मनु के पास सुंदर अकेली रह गई थी।

गणेश मंदिर में विवाह का आलीशान मंडप बनाया गया था। विवाह कराने के लिए एक वयोवृद्ध पंडित को बुलाया गया था। मंडप में वर-वधू को यथोचित आसन पर बिठाया गया था। पंडित जी ने श्लोक का उच्चारण किया। उसके बाद वर-वधू ने विवाह के सात फेरे लिए। पंडित जी ने विवाह अच्छी तरह से संपन्न कराया। फिर वहां पर मनु का नाम महारानी लक्ष्मी बाई रख दिया गया। इस शुभ अवसर पर महाराज और महारानी की जय-जयकार होने लगी।

विवाह के बाद महाराज गंगाधर राव को झांसी में शासन करने का अधिकार प्राप्त हो गया। अंग्रेजों के साथ उनका यह समझौता हुआ था कि झांसी में एक अंग्रेजी फौज रखी जाएगी, यह फौज अंग्रेजी सरकार के अंतर्गत रहेगी, जिसकी देख-रेख का सारा व्यय झांसी नरेश को देना होगा। लेकिन झांसी नरेश ने फौज की देख-रेख का

व्यय देने के बजाय झांसी राज्य का एक इलाका अंग्रेजों को दे दिया। इस इलाके की होने वाली आय से अंग्रेज झांसी की फौज का खर्च चलाते थे।

महाराज गंगाधर राव झांसी पर अपना एकछत्र अधिकार पाकर बड़े खुश हुए। उन्होंने नाटक कंपनी को नाटक खेलने के लिए कहा। मोतीबाई, जो नाटक कंपनी में शामिल थीं, ने अपने नृत्य से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

महारानी लक्ष्मीबाई को महाराज ने अपने किले वाले महल में स्थान दिया था। यहां महारानी का अधिकांश समय महल के भीतर ही व्यतीत होता था। वे जब महल से बाहर निकलती थीं, तो उनके चारों ओर पर्दा होता था। महारानी घुड़सवारी और व्यायाम आदि किले के भीतर ही किया करती थीं। उन्होंने महल की दासियों को हमेशा अपनी सहेलियों की तरह समझा। वे जब से महल में आई थीं, दिनोंदिन गंभीर होती जा रही थीं। महाराज पर्दा प्रथा को बहुत मानते थे। इसलिए वे महारानी को बाहर निकलने पर पर्दा करने का सुझाव देते रहते थे। प्रजा की औरतें चाहे पर्दा करें या न करें, इस पर महाराज को कोई आपत्ति नहीं थी। उन्होंने अपने महल के अंदर पर्दा प्रथा का नियम सख्ती से लागू किया हुआ था।

एक दिन महाराज अपने थियेटर गए हुए थे। रात को वे थियेटर से जल्दी लौट आए। महारानी ने उनका यथोचित आदर-सत्कार करते हुए कहा—"आप थियेटर से इतनी जल्दी क्यों आ गए?"

"एक घटना हो गई। इसलिए मैं जल्दी चला आया।" महाराज ने उत्तर दिया।

"कैसी घटना?" महारानी ने पूछा।

"खुदाबख्श नाम का हमारा एक सरदार था। आज वह न जाने कैसे नाट्यशाला में घुस आया। उसने मोतीबाई के साथ अभद्र व्यवहार

किया। उसका यह व्यवहार मेरे तन-बदन में आग लगा गया और मैंने क्रोध में आकर खुदाबख्श को देश निकाला दे दिया। अब उसका पता नहीं है कि कहां गया? मुझे बाद में यह भी लगा कि मोतीबाई उसे जानती है। इसलिए मैं मोतीबाई को नाट्यशाला से बर्खास्त कर चुका हूं। आज मेरे जल्दी आने का यही कारण है।'' महाराज गंगाधर राव ने कहा।

''मोतीबाई के चले जाने से अब आपको नृत्य-गीत का आनंद कैसे मिलेगा?'' लक्ष्मीबाई ने गंगाधर राव से पूछा।

''हमारी नाट्यशाला में और भी कई नाचने-गाने वाली अदाकारा हैं। रानी साहिबा! मेरे साथ आप भी नाट्यशाला चला करें।'' गंगाधर राव बोले।

''मेरी रुचि वहां चलने में बिल्कुल नहीं है। कृपया आप मुझे न ले चलें तो अच्छा रहेगा।'' लक्ष्मीबाई ने उत्तर दिया।

''रानी साहिबा! क्या आपको घुड़सवारी और निशानेबाजी के अलावा और कुछ भी पसंद है?''

''जी महाराज! मैं सहेलियों को अपना बनाने में बड़ी दिलचस्पी लेती हूं। कभी जरूरत पड़े तो मेरी सहेलियां पुरुषों की सहायता कर सकती हैं।''

''रानी साहिबा! आप अपनी सहेलियों को शारीरिक मजबूती प्रदान करने की शिक्षा देती हैं। आप इन्हें इतना मजबूत बनाकर क्या करेंगी।''

''अभी इसका मेरे पास कोई जवाब नहीं है महाराज। इतना मैं अवश्य कहूंगी कि तन-मन को सबल बनाना बहुत महत्वपूर्ण है।''

''यदि आप अपनी सहेलियों को घुड़सवारी की शिक्षा देंगी तो मुझे लगता है कि ये कहीं फूहड़ न हो जाएं।''

''यदि मैं इन्हें नृत्य वगैरह सिखाऊं तो?''

''तो फिर ये मन और शरीर के लिए काफी कसरत कर सकती हैं।''

''ठीक कहा आपने। आपका यहां स्वराज्य तो स्थापित है ही। नाच-गाने में आनंद लेने के सिवाय और काम ही क्या बचा है?'' महारानी ने व्यंग्य से मुस्कराते हुए कहा।

''रानी साहिबा! हमारे यहां के लोगों में एकता नहीं है। यहां डकैतों की भरमार है। आए दिन रोज वे राहजनी करते हैं। यहां अंग्रेजों ने अपना राज्य इसलिए स्थापित कर लिया कि उनके पास हथियारों की कमी नहीं है।''

''महाराज! आप अपने थियेटर में जो हथियार प्रयोग करते हैं क्या उनसे अंग्रेजों को यहां से भगाया नहीं जा सकता।''

महारानी का यह व्यंग्य सुनकर महाराज बुरा मान गए, फिर भी उन्होंने अपने चेहरे पर मुस्कान बिखेरते हुए कहा—''रानी साहिबा आप राज्य की व्यवस्था करना सीखिए। राज्य की व्यवस्था चुस्त-दुरुस्त होनी चाहिए अन्यथा अंग्रेज फिर अपने राज्य पर अधिकार जमा लेंगे।''

''मैं जानती हूं महाराज! अंग्रेज हमारी दो-ढाई लाख की जागीर हड़प चुके हैं।''

''रानी साहिबा! भारत में जितनी भी रियासतें हैं, उन सभी पर अंग्रेजों ने अपनी सेनाएं तैनात कर दी हैं। अपने राज्य की तरह कुछ राज्य ऐसे हैं, जिनके कुछ भागों पर अंग्रेजों का अधिकार है। उस भाग से जो आय होती है, उसे अंग्रेज अपनी सेना के खर्च में व्यय कर देते हैं।''

''ऐसी बात है क्या?''

''हां रानी साहिबा! आप मुझे एक बात बताइए, क्या आपको हमारे थियेटर का मनोरंजन बिल्कुल पसंद नहीं।''

''ऐसी बात नहीं है महाराज! प्रमुख बात यह है कि जिस राज-काज को आप चलाते हैं, उसे आपके दीवान भी चला सकते हैं और आपके राज्य के एक भाग में जो अंग्रेजी सेना है, वह आपकी प्रजा को डाकुओं और ठगहारों से मुक्ति दिला सकती है तथा प्रजा को शांतिपथ पर अग्रसर भी कर सकती है।'' महारानी ने मुस्कराते हुए कहा।

उनकी बातें राजा के हृदय में तीर की तरह चुभीं, लेकिन उन्हें रानी की कुशाग्र बुद्धि का एहसास हो गया। उन्होंने रानी से गंभीर मुद्रा में कहा—''हम अपने नए नियम के अंतर्गत डाकुओं और ठगहारों को कड़ा दंड देते हैं।''

''महाराज! क्या आपने कभी अंग्रेजों को भी कड़ा दण्ड दिया है?''

''रानी साहिबा! तुमने कहां की बात कहां पहुंचा दी।''

इतना कहकर महाराज खिलखिलाकर हंस पड़े।

पुत्र रत्न की प्राप्ति

अब लक्ष्मीबाई के विवाह को तीन वर्ष हो गए थे। समय अपनी रफ्तार से आगे बढ़ता रहा। एक दिन महल की एक स्त्री ने आकर राजा साहब से कहा—''बधाई हो महाराज! रानी साहिबा ने पुत्र को जन्म दिया है।''

यह खुशखबरी सुनते ही राजा साहब खुशी के मारे निहाल हो उठे। राजमहल में चारों ओर खुशियां नाचने लगीं, लेकिन विधाता से ये खुशियां देखी नहीं गईं। उसने रानी के पुत्र को उनकी गोद से हमेशा-हमेशा के लिए छीन लिया। उस समय रानी का पुत्र मात्र तीन माह का था। उसके गुजर जाने से राजा और रानी पर मुसीबतों का

पहाड़ टूट पड़ा। पुत्र के शोक में दोनों की तबीयत खराब हो गई और उनके दिन कष्ट में व्यतीत होने लगे।

कष्ट के चलते राजा को खुदाबख्श पर क्रोध आ रहा था। किसी ने उन्हें आकर सूचना दी कि खुदाबख्श कभी-कभी नवाब अली बहादुर के महल में आता रहता है। यह सुनकर राजा ने उसकी हवेली जब्त कर ली। इसकी एक वजह यह भी थी कि राजा और नवाब अली बहादुर में काफी दिनों से अनबन चल रही थी। अली बहादुर उनके मंझले भाई रघुनाथ राव का पुत्र था। रघुनाथ राव ने लच्छो नाम की एक वेश्या को अपनी रखैल के रूप में रखा हुआ था। लच्छो के ही पेट से अली बहादुर का जन्म हुआ था। उस समय रघुनाथ राव झांसी के राजा थे। इसलिए लोग उनके पुत्र को नवाब अली बहादुर कहकर बुलाते थे। गंगाधर राव भाइयों में सबसे छोटे थे। उनके बड़े भाई का नाम कृष्ण राव था। कृष्ण राव के पुत्र का नाम रामचन्द्र राव था। उनकी मृत्यु के बाद रामचन्द्र राव को गद्दी पर बिठाया गया।

जब गंगाधर राव को झांसी का राज सिंहासन मिला, तब अंग्रेजों ने झांसी की एक बड़ी जागीर अली बहादुर को दे दी। इसी जागीर को लेकर दोनों के बीच में वाद-विवाद होता चला आ रहा था। अली बहादुर महाराज गंगाधर राव को बड़ी ईर्ष्या से देखा करता था।

सन् 1853 की बात है। महाराज गंगाधर राव दो वर्षों से बीमार चल रहे थे। एक दिन उनके मन में यह बात आई कि किसी बालक को गोद ले लूं। यह इच्छा उन्होंने अपनी रानी को बताई। रानी ने उनसे सहमत होकर एक सजातीय बालक को गोद ले लिया। गोद लेने के पहले उस बालक का नाम आनंदराव था, लेकिन अब उसका नाम रानी ने दामोदर राव रख दिया था। इस खुशी में राजमहल में एक बड़ा समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह में झांसी के सेठ-साहूकार

और सरदारों को आमंत्रित किया गया। इनके अलावा वहां कुछ अंग्रेज अधिकारी भी उपस्थित थे। जिनमें मेजर एलिस और कप्तान मार्टिन, के नाम प्रमुख थे। इन्हें समारोह के बाद महल के अंदर रोक लिया गया। बाकी और लोगों को वहां से विदा कर दिया गया। राजा ने गोद स्वीकृति के लिए प्रधानमंत्री से एक सरकारी आदेश पत्र लिखवाया। बाद में इस पत्र को उन्होंने अंग्रेज अधिकारियों के हाथ में दे दिया। रानी पर्दे के पीछे बैठी हुई थीं। वे राजा के करीब थीं और आंसू बहा रही थीं। उन्हें शायद यह पता चल गया था कि राजा की बीमारी उनके लिए जानलेवा है।

''दामोदर राव बड़ा होनहार बालक है—मेजर साहब।'' राजा ने मेजर एलिस से कहा—''वह सौभाग्यशाली है जो उसे लक्ष्मीबाई जैसी मां मिली। मैं उम्मीद करता हूं कि रानी और दामोदर राव दोनों झांसी के नाम को बहुत ऊंचाई प्रदान करेंगे।''

रानी की सिसकियों की आवाज राजा और एलिस को सुनाई पड़ रही थी। एलिस ने पर्दे की ओर देखकर अपना मुंह दूसरी ओर फेर लिया। राजा ने जब रानी की ओर देखा तो वे भी अपने आंसुओं को नहीं रोक सके। वे रुंधे गले से बोले—''रानी साहिबा! आंसू बहाना किसी समस्या का समाधान नहीं है। विधाता को जो मंजूर होगा, वही होगा।''

यह सुनकर रानी का रोना बंद हो गया।

''हमारी रानी साहिबा गुणों की भंडार हैं—मेजर साहब। आप देख लेना, एक दिन ऐसा आएगा, जब रानी के कदमों की धूल लोग अपने माथे पर लगाएंगे।'' राजा ने एलिस कहा।

उनके आंसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे। एलिस को इस बात का डर था कि राजा की तबीयत और अधिक न बिगड़ जाए। इसलिए उन्होंने राजा को चुप रहने के लिए कहा—''अधिक देर तक बात

करना आपकी सेहत के लिए ठीक नहीं है राजा साहब। इसलिए कृपया आप कम बोलने का प्रयास करें।''

तभी राजा को जोर से खांसी आई और उनके सीने में दर्द उठने लगा।

''मैं झांसी के लोगों से बहुत प्यार करता हूं। ईश्वर उन्हें सदा सुखी रखे।'' राजा ने अपनी खांसी को नियंत्रित करते हुए कहा। उनकी खांसी बंद नहीं हुई। उनके मुंह से कुछ देर बाद खून निकलने लगा। अब उनकी हालत पहले से भी अधिक खराब हो गई। इतने में दोनों अंग्रेज अधिकारी वहां से उठकर चले गए। उनके जाने के बाद रानी पर्दे से निकलकर राजा के पास आईं।

मूक बना कालचक्र सब कुछ देखता रहा। होनी किसी कीमत पर नहीं टल सकी। राजा गंगाधर राव की आत्मा परमात्मा में विलीन हो गई।

महल में राजा की मृत्यु से हाहाकार मच गया। नर-नारी सभी बिलख-बिलखकर रो पड़े। रानी असह्य दुख से तड़पने लगीं। वे अपने आपको काबू में नहीं कर सकीं। उसी समय उनके पास मोरोपंत दामोदर राव को लेकर आए। उन्होंने दामोदर राव को रानी की गोद में बैठा दिया।

बाजीराव गंगाधर राव से पहले ही ईश्वर को प्यारे हो गए थे। इसलिए अंग्रेजी सरकार ने उनकी पेंशन समाप्त कर दी थी। अंग्रेजों का बुरा व्यवहार नाना के दिमाग में हमेशा खटकता रहता था। यही कारण था, जो नाना तात्या के साथ मिलकर स्वराज्य की स्थापना का उपाय खोजने लगे। उधर, अंग्रेज भारत के विभिन्न राज्यों पर अपना अधिकार जमाते चल जा रहे थे।

भारत के अधिकांश क्षेत्र उनके हाथ में आ गए थे। भारत के कई राजा-महाराजा उनके अधीन हो गए थे। अंग्रेज चारों ओर अपने धर्म

का प्रचार-प्रसार कर रहे थे। ऐसे में नाना और तात्या झांसी की रानी से मिलने उनके पास आए।

रानी लक्ष्मीबाई का शरीर काफी दुबला हो गया था। इसलिए उनका मुख थोड़ा लम्बा दिखाई पड़ रहा था। वे अपने महल में विराजमान थीं। महल के एक कोने में उनकी सहेलियां सुन्दर, मुन्दर और काशीबाई भी बैठी हुई थीं। तभी नाना ने तात्या के साथ रानी के महल में प्रवेश किया।

''महाराज के निधन का दुखद समाचार पाकर हमें बहुत दुख हुआ। विधि के विधान के आगे क्या किया जा सकता है।'' नाना ने रानी लक्ष्मीबाई के करीब पहुंचकर सान्त्वना देते हुए कहा।

''होनी के आगे इंसान को मजबूर होना पड़ता है नाना।'' रानी ने सोचते हुए कहा।

''आपका राज-काज कैसे चल रहा है?'' नाना ने पूछा।

''राज-काज ठीक चल रहा है, लेकिन बुंदेलखंड के राजे-रजवाड़ों का हौसला पस्त हो गया है।''

''क्या उनका हौसला बढ़ाया नहीं जा सकता?''

''इस विषय पर मैं कुछ नहीं कह सकती, क्योंकि मैं बाहर आने-जाने में व्यस्त हूं। यदि आप लोगों ने राज्य में विचरण किया होगा तो स्थिति का पता आपको चल गया होगा।''

''जी हां, मैं राज्य के कई हिस्सों में गया हूं।'' तात्या ने रानी की ओर देखते हुए कहा—''राज्य का माहौल देखकर ऐसा लगा कि कुछ राजा और नवाब मद और मदिरा में मस्त हैं। कुछ नवाब और राजा ऐसे हैं, जो ऊब गए हैं।''

''लखनऊ और दिल्ली की स्थिति यहां से काफी ठीक है।'' नाना ने कहा।

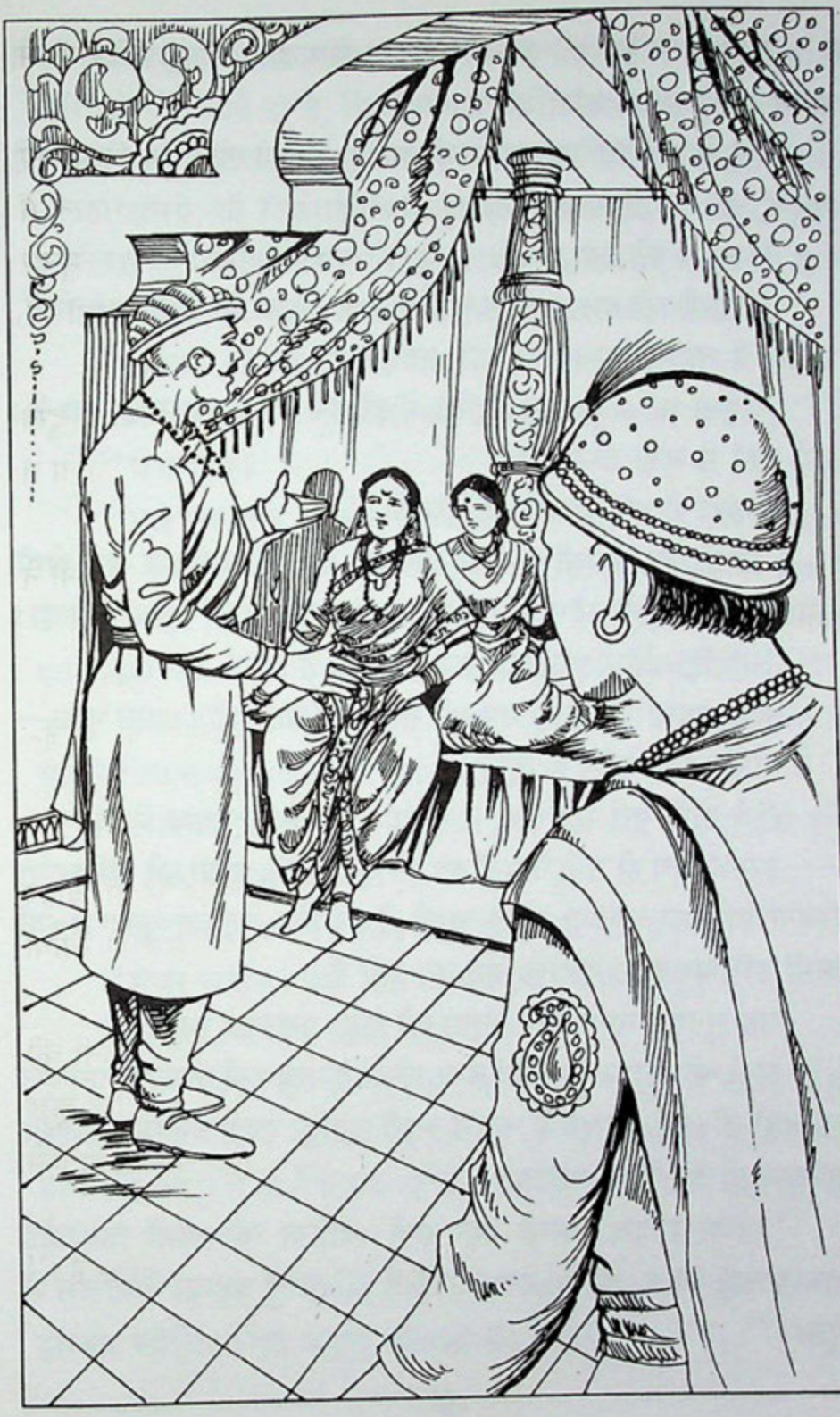

''रानी साहिबा।'' तात्या ने नम्रता से कहा—''बहुत दिन पहले हम लोग लखनऊ और दिल्ली गए थे।''

''मुझे रानी साहिबा मत कहो तात्या। मैं तुम लोगों के लिए वही मनु हूं, जो तुम्हारे साथ खेला करती थी''

''झांसी की क्या स्थिति है मनु।'' नाना ने पूछा।

''झांसी की हालत ठीक नहीं है नाना। यहां जो कुछ हाथ में है, लगता है वह भी हाथ से निकल जाएगा।''

''ऐसा मत कहो मनु। झांसी में ही हम लोगों का सब कुछ है। हमें यहां से बड़ी उम्मीदें हैं।''

''यहां से क्या उम्मीद है आपको?''

''यही कि अंग्रेजी सरकार दामोदर राव को स्वीकार कर लेगी और आप झांसी के लोगों में एकता स्थापित करेंगी।'' तात्या ने कहा।

''देखो, अंग्रेजों का क्या फैसला होता है?''

तभी तात्या की नजर मनु की सहेलियों पर पड़ी। उसने पूछा—''ये तीनों स्त्रियां कौन हैं मनु?''

''ये तीनों मेरी सहेलियां हैं तात्या।'' रानी ने जवाब दिया।

इसके साथ ही रानी ने उन्हें यह भी बताया कि झांसी की अधिकांश स्त्रियां हथियार चलाना सीख चुकी हैं। इनके अलावा कुछ स्त्रियां अभी हथियार का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं।

यह सुनकर नाना और तात्या को बड़ी प्रसन्नता हुई।

सर्दी का मौसम था। सर्द हवा लोगों के बदन में कंपकंपी उत्पन्न कर रही थी। ऐसे मौसम में नवाब अली बहादुर हाथी पर सवार होकर एलिस की कोठी पर पहुंचा।

''मेजर साहब! अभी तक रानी साहिबा की अर्जी का कोई जवाब नहीं आया। इसका क्या कारण है?'' अली बहादुर ने एलिस से पूछा।

''मैं क्या बताऊं नवाब साहब। रानी साहिबा ने बालक के गोद लेने की जो अर्जी दी है, वह नामंजूर भी हो सकती है। फैसला कुछ दिनों में आप सबके सामने आ ही जाएगा।'' एलिस ने उत्तर दिया।

''झांसी की रियासत पर बड़े जुल्म ढाए गए हैं मेजर साहब। इसलिए यहां के लोग सरकारी हुकूमत पसंद करेंगे। मैं जानता हूं कि सरकार झांसी की आम जनता का कितना भला चाहती है।''

''सरकार तो बहुत भला चाहती है नवाब साहब।''

''मैं आपसे एक गुजारिश करना चाहता हूं मेजर साहब।''

''फरमाइए?''

''मुझे महाराज ने कुल पच्चासी गांव जागीर के रूप में प्रदान किए थे, लेकिन जब सरकारी व्यवस्था की गई तो वे गांव मेरे हाथ से निकल गए। फिर मुझे मात्र पांच सौ रुपये के वेतन पर रखा गया। इतने कम पैसे में मैं अपना गुजारा कैसे करूं? आप ही बताइए।''

''आप चिंता मत कीजिए नवाब साहब। मैं आपका दोस्त हूं। मुझसे जितना हो सकेगा, मैं आपके हित के लिए करूंगा।''

''आपका बहुत-बहुत शुक्रिया। मैं तो यही कहूंगा कि खुदा आपको लाट साहब बना दे।''

''खुदा आपकी मनोकामना अवश्य पूरी करेगा।''

''मेजर साहब! एक बात आपसे और कहनी थी।''

''कहिए। संकोच किस बात का।''

''आप जानते हैं कि मेरे पिता का महल पहले मेरे कब्जे में था, लेकिन बाद में उस पर गंगाधर राव ने अपना अधिकार जमा लिया। अब उस महल में ताले लटक रहे हैं। वह मेरे किसी काम नहीं आ रहा है मेजर साहब।''

''मैं जानता हूं नवाब साहब कि वह महल आपका है। आप इंतजार कीजिए। वह महल आपको ही मिलेगा।''

यह सुनकर नवाब अली बहादुर ने शुक्रिया का पुलिंदा बांध दिया। इसके बाद उन्होंने चलने की इजाजत चाही तो मेजर ने उन्हें रोकते हुए कहा—"कुछ देर और रुक जाइए नवाब साहब।"

नवाब साहब चुपचाप बैठ गए।

मेजर ने उनसे पूछा—"आपकी बस्ती का क्या समाचार है?"

"बस्ती के लोग बहुत परेशान हैं, मेजर साहब। वे लोग सरकार के राज में सुख का अनुभव करेंगे। ऐसा मेरा मानना है।" नवाब अली बहादुर ने कहा।

"नवाब साहब! आप बस्ती के मुख्य-मुख्य लोगों से मिलते रहिए और उनका सुख-दुख भी पूछते रहिए। आगे जो भी कार्यवाही होगी, मैं उससे आपको अवगत करा दूंगा।"

"जैसी आप की आज्ञा मेजर साहब। मैं दूसरे-तीसरे दिन आपको बस्ती की रिपोर्ट देता रहूंगा।"

"झांसी की रानी साहिबा कैसी हैं?"

"मेजर साहब! आजकल वे बड़ी व्यस्त हैं। उन्हें घुड़सवारी और हथियार चलाने का शौक है। जब देखो तब वे अपने धर्म की किताबें पढ़ती रहती हैं।"

"आप ये बताइए कि इधर-उधर के लोग रानी साहिबा को बहकाने का तो काम नहीं कर रहे हैं।"

"उनके घर कुछ रिश्ते-नातेदार आए तो थे, पर वे जल्दी ही चले गए।"

"नवाब साहब! आप ऐसे लोगों पर नजर रखा करें।"

"ठीक है मेजर साहब। इस काम के लिए मैं अपने एक विश्वास-पात्र नौकर पीर अली को लगा देता हूं।"

नवाब अली बहादुर मेजर से बातचीत करने के बाद अपनी हवेली लौट आया। उसने पीर अली को उपर्युक्त काम पर लगा दिया।

उसकी हवेली में खुदाबख्श ठहरा हुआ था। उसके आते ही खुदाबख्श ने उससे पूछा—''नवाब साहब। आपने मेजर साहब से मेरे बारे में क्या बातचीत की?''

''खुदाबख्श! मैं तुम्हारे मन की सारी बातें मेजर साहब से मनवा चुका हूं। वे उन बातों पर विचार करेंगे।'' साफ-साफ झूठ बोलते हुए नवाब अली बहादुर ने कहा।

खुदाबख्श एक गबरू नौजवान था। वह उन दिनों कठिनाइयों के दौर से गुजर रहा था।

''मैं अपनी अर्जी रानी साहिबा के पास भेज चुका हूं।'' खुदाबख्श ने बताया—''रानी साहिबा ने मुझे झांसी में रहने की इजाजत दे दी है। उन्होंने यह भी कहा है कि लाटसाहब के यहां से अधिकार मिलने पर जागीर का भी खुलासा कर दिया जाएगा।''

यह सुनकर नवाब अंदर ही अंदर कुढ़ने लगा। कुछ देर के बाद उसने खुदाबख्श से कहा—''तुमने रानी साहिबा के पास अर्जी किसके हाथ भेजी थी।''

''मोतीबाई के हाथ। वह पहले उनकी नाट्यशाला में काम करती थी। उसकी पगार बाकी थी, इसलिए उसने रानी साहिबा के पास जाकर अपनी पगार ली और मेरी अर्जी भी पेश की।'' खुदाबख्श ने बताया।

''आप चिंता न करें खुदाबख्श! मुझसे जितना हो सकेगा, मैं आपकी सहायता करूंगा।'' नवाब बोला।

समय ने करवट बदली।

एक दिन मेजर एलिस अपने सुरक्षागार्डों के साथ राजमहल में पहुंचा। उसने महल के दीवान से पूछा—''महारानी जी हैं क्या?''

''जी हां। महारानी जी पर्दे के पीछे विराजमान हैं।'' दीवान बोला।

तभी मेजर ने अपनी जेब से एक पत्र निकाला और उस पत्र को पढ़ने लगा—''मैंने महारानी के दत्तक लेने की अर्जी गवर्नर जनरल साहब के समक्ष पेश की थी, लेकिन अफसोस कि उन्होंने अर्जी को नामंजूर कर दिया। सरकार की ओर से महारानी को पांच हजार रुपये पेंशन के रूप में दिए जाएंगे। ये पैसे उनके गुजारे के लिए काफी हैं।''

यह सुनकर दीवान हाय-हाय करने लगा। महारानी जी मेजर की सारी बातें सुन चुकी थीं।

वे ऊंची आवाज में पर्दे के पीछे से बोलीं—''जब तक मेरी सांस चलेगी, तब तक मैं झांसी को अपने हाथ से नहीं जाने दूंगी। गवर्नर ने मेरे साथ अन्याय किया है। मुझे उसके पेंशन की कोई दरकार नहीं है।''

महारानी की बात सुनकर मेजर वहां ज्यादा देर रुक नहीं सका। वह शीघ्र ही महारानी के महल से बाहर चला गया।

महारानी की सहेली सुन्दर उनके पास पर्दे के अंदर बैठी हुई थी। वह मेजर की घोषणा सुनकर मूर्छित होकर गिर पड़ी थी। जब उसे होश आया तो वह रोने लगी।

''इस तरह रोने-बिलखने से कोई लाभ नहीं है—सुंदर। धैर्य रखो। हम हर परिस्थिति का जमकर मुकाबला करेंगे।'' महारानी ने सुंदर को दिलासा देते हुए कहा।

अंग्रेजी सरकार ने रानी को अविलंब किला खाली करने का निर्देश दे दिया। मेजर एलिस ने दीवान से झांसी के दफ्तरों की चाबियां ले लीं। उसने पूरे झांसी नगर में अंग्रेजी राज्य का ढिंढोरा पिटवा दिया। झांसी के थाने पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

रानी लक्ष्मीबाई ने किला खाली कर दिया। अब किले में अंग्रेजी सेना की एक टुकड़ी तैनात कर दी गई थी। रानी अब झांसी शहर के एक महल में आकर रहने लगीं। उनके साथ उनकी तीनों सहेलियां

भी रह रही थीं। एक दिन सुन्दर ने आंसू भरकर रानी साहिबा से कहा—''इस विकट परिस्थिति में क्या होगा, रानी साहिबा।''

''संयम बनाए रखो।'' रानी ने सुंदर के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—''आंसू बहाने से शक्ति नष्ट हो जाती है, इसलिए आंसू मत बहाओ। मेरी तरह जीजाबाई को भी पति का पूरा सुख नहीं मिला था। लेकिन जीजाबाई ने अपने पुत्र छत्रपति शिवाजी को पाल-पोसकर बड़ा किया। इस उम्मीद के साथ कि उनका पुत्र एक दिन दुश्मनों के दांत खट्टे कर देगा। सो.शिवाजी ने किया भी। इसलिए मैं भी दामोदर राव को पाल-पोसकर बड़ा करूंगी। मैं उसे इस योग्य बनाऊंगी ताकि वह दुश्मनों के छक्के छुड़ा सके।''

रानी की साहस भरी बातें सुनकर उनकी सहेलियां आंसू पोंछने लगीं।

रानी ने उन्हें फिर समझाते हुए कहा—''हर इंसान के मार्ग में मुश्किलें आती हैं। अंग्रेजी सरकार ने गोद लिए पुत्र स्वीकार न करके हमारे रास्ते में मुश्किलें पैदा की हैं। हमें इन मुश्किलों से घबराना नहीं है। भगवान कृष्ण ने जिस तरह से अर्जुन को कर्म करते रहने का उपदेश दिया था, उसी तरह से हम भी अपना कर्म करते रहेंगे। हिन्दुस्तान में चाहे कोई स्वराज्य प्राप्त करने का प्रयास करे या न करे, लेकिन हम स्वराज्य प्राप्त करने का प्रयास करते रहेंगे। मैंने ईश्वर के सामने स्वराज्य प्राप्त करने का बीड़ा उठा लिया है। जनता हमारे साथ है। अंग्रेज देश के राजाओं को भले ही मिटा दें, मगर वे देश की जनता को नहीं मिटा सकते। वह दिन दूर नहीं, जब मैं जनता के समक्ष उपस्थित होकर स्वराज्य का नारा दूंगी।''

यह सुनकर रानी की सहेलियों का आत्मविश्वास परवान चढ़ने लगा। सुन्दर ने रानी से कहा—''अब अंग्रेज हमारा पराक्रम देखेंगे रानी साहिबा।''

''शाबाश सुंदर! ऐसा ही हौसला मैं जनता में देखना चाहती हूं।'' रानी बोली।

''रानी साहिबा! मैंने सुना है कि अपने राज्य की सेना को छः महीने का वेतन देकर समाप्त कर दिया गया है। ऐसे में हमें सैनिकों की सख्त आवश्यकता है। क्या आप दोबारा नए सिरे से सैनिकों की भर्ती करेंगी?'' सुन्दर ने कहा।

''जरूरत पड़ने पर सैनिकों की भर्ती की जाएगी।'' रानी ने गंभीर लहजे में कहा—''जिन सैनिकों की सेवा समाप्त कर दी गई है, वे आवश्यकता पड़ने पर अपने हजारों साथियों के साथ हमारे लिए मैदान में कूद पड़ेंगे। ऐसे में हमें स्त्रियों को भी लड़ने के लिए तैयार करना है, क्योंकि अंग्रेजों को स्त्रियों के मैदान में उतरने का गुमान तक न होगा।''

अगले दिन से स्त्रियों को एकत्र करने का कार्य शुरू हो गया। कुछ दिनों में रानी के पास स्त्रियों की बाढ़ सी आ गई। सभी स्त्रियों को घुड़सवारी और हथियार चलाने का प्रशिक्षण दिया जाने लगा। रानी की सहेलियां नगर से बाहर जाकर पहाड़ी इलाकों का प्रशिक्षण प्राप्त करने लगीं।

अब सभी स्त्रियां घुड़सवारी और हथियार चलाने में निपुण हो गई थीं। ऐसे में एक दिन तात्या टोपे रानी से मिलने आए। इस बार उन्होंने रानी के चेहरे पर एक अजीब सा तेज देखा। वे उनसे राजनीतिक हालात पर चर्चा करने लगे।

''आज के इस राजनीतिक माहौल में जनता सजग हो गई है, लेकिन देश के अधिकांश राजा और नवाब अंग्रेजों के आतंक से परेशान हो उठे हैं जबकि सैनिक अपने स्वाभिमान का परिचय दे रहे हैं।'' तात्या ने रानी से कहा।

''देखते रहो तात्या। एक दिन पर्वतों की गुफाएं हमारे सैनिकों की जय-जयकार से गूंज उठेंगी।'' रानी बोलीं।

''यही बात हमारे हृदय में हलचल मचा रही थी। अच्छा हुआ जो आपने ये बातें अपने मुंह से कह दीं।''

''अभी बहुत काम बाकी पड़े हैं तात्या। किस स्थान पर कैसी सेना ले जानी है, अभी यह निश्चित करना है। कहां-कहां युद्ध होगा? यह भी जानना जरूरी है।''

''रानी साहिबा! ये सारी बातें हम सोच चुके हैं। इसके लिए नाना साहब भी बड़ी दृढ़ता से पेश आ रहे हैं। आप चिंता न करें। आपकी आज्ञा का बड़ी सख्ती से पालन किया जाएगा।''

''तात्या! तुम हथियार और युद्ध सामग्री बनाने वाले कारीगरों को अपने अधिकार में ले लो।''

''ठीक है रानी साहिबा।''

''मैंने उसके लिए एक गुप्तचर विभाग की स्थापना कर दी है।''

''ये तो बड़ी खुशी की बात है, रानी साहिबा।''

''मैंने अपनी तीनों सहेलियों को जासूसी के काम में लगा दिया है। उनके साथ कुछ और स्त्रियां भी सावधानीपूर्वक कार्य कर रही हैं।''

''रानी साहिबा! उधर, नाना साहब भी अपने भाई को लेकर स्वराज्य के कामों में जुटे हुए हैं।''

''तात्या तुम भी सुन लो और नाना साहब से भी कह देना कि स्वराज्य प्राप्त करने के लिए पूरी तैयारी होनी चाहिए।''

''आपका संदेश मैं नाना साहब तक अवश्य पहुंचाऊंगा।''

इतना कहकर तात्या वहां से चला गया। अगले दिन वह दो व्यक्तियों को लेकर रानी के पास आया, वे दोनों दीवान थे। एक का नाम रघुनाथ सिंह था और दूसरे का नाम जवाहर सिंह।

''तुम जवाहर को कहां से लेकर आ रहे हो तात्या।'' रानी ने तात्या से पूछा।

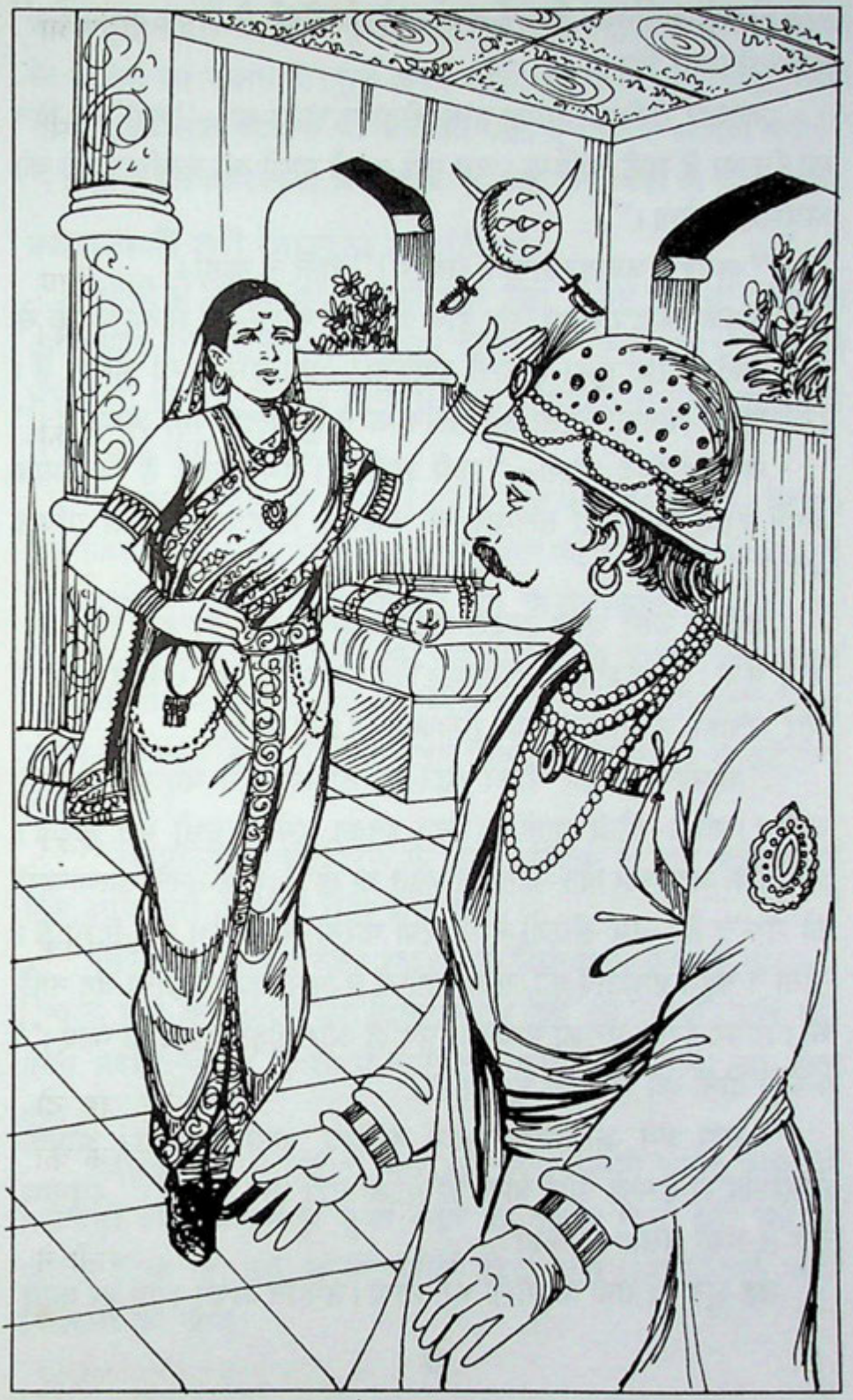

''रानी साहिबा! मैं इन्हें इनके गांव कटीली से लेकर आया हूं।'' तात्या ने उत्तर दिया।

जवाहर रानी के समक्ष हाथ जोड़कर खड़ा था—''मुझे उस दिन का इंतजार है रानी साहिबा। जब मुझे अपने प्राणों की बाजी लगाने का अवसर मिलेगा।''

''अवश्य जवाहर सिंह! अवश्य!'' रानी ने कहा।

उसके बाद रघुनाथ सिंह हाथ जोड़कर बोला—''मैं तात्या जी से सारी बातें समझ चुका हूं रानी साहिबा! आप हमारी मां समान हैं। इसलिए मैं आपकी आज्ञा का पालन करने के लिए यहां आया हूं।''

जवाहर सिंह बोला—''रानी साहिबा! हम चाहते हैं कि आप अपने हाथों से हमारी तलवार पर गंगाजल छिड़क कर उसे पवित्र करें।''

रानी ने उसी वक्त अपनी सहेली सुन्दर को गंगाजल लाने के लिए भेजा। सुन्दर शीघ्र ही गंगाजल लेकर वापस आई। रानी ने रघुनाथ और जवाहर की तलवारों पर गंगाजल के छींटे मारे।

''आपकी तलवारें मौका आने पर ही म्यान से बाहर निकलनी चाहिए। छोटी-छोटी बातों के लिए इनका प्रयोग कभी मत करना। अंग्रेजों के अत्याचार दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। तुम्हें उनके अत्याचारों को रोकना है। अब अंग्रेजों ने गौहत्या करना भी आरंभ कर दिया है। लोगों ने बहुत प्रार्थनाएं कीं, मगर अंग्रेजों ने अभी तक गौहत्या बंद नहीं की। शायद ईश्वर उनकी प्रार्थनाएं सुन ले और गौहत्या बंद हो जाए।'' रानी ने दोनों को समझाते हुए कहा।

''आप हमें आशीर्वाद प्रदान कीजिए, रानी साहिबा। आपके आशीर्वाद से हमारा कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता।'' रघुनाथ सिंह ने बड़ी नम्रता से कहा।

यह सुनकर रानी का गला भर आया। उन्होंने अपने आप पर काबू

करते हुए कहा—''ईश्वर तुम्हें सदा सुखी रखे। तुम्हारे हाथों स्वराज्य के आदर्श का पालन हो। तुम अपने कार्यों की ऐसी छाप छोड़ो, जिसे आने वाली सात पीढ़ियां भी याद करें और तुम उनके आदर्श बनो।''

रानी का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद दोनों वहां से चले गए।

महारानी की जासूस सहेलियां

झांसी में डकैती की वारदातें बड़ी तेजी से बढ़ रही थीं। वहां के अधिकांश लोग डकैती का प्रमुख जिम्मेदार डाकू सागर सिंह को मानते थे, इसलिए उन्होंने सागर सिंह के खिलाफ अंग्रेजी प्रशासन में रिपोर्ट दर्ज करा रखी थी।

प्रशासन ने कुछ ही दिनों में सागर सिंह को गिरफ्तार कर लिया। उसे जिस जेल में बंद किया गया, उस जेल का दरोगा बख्शीश अली था। बख्शीश अली पहले गंगाधर राव के राज्यकाल में झांसी के फाटकों का प्रधान अधिकारी था। एक दिन अंग्रेज उच्चाधिकारी सागर सिंह को देखने जेल में गए। बख्शीश अली ने उन अधिकारियों का जमकर स्वागत किया, लेकिन सागर सिंह ने अधिकारियों से बड़े रोब में बात की।

''सागरसिंह अपने गिरोह के सभी साथियों के नाम बताओ?'' एक अधिकारी ने सागर सिंह से कहा।

सागर सिंह भूख से तड़प रहा था। इसलिए वह नम्र होकर बोला—''भूखा होने के कारण मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा है। यदि मुझे आप भरपेट भोजन दें, तो मैं कल तक सभी साथियों के नाम बता दूंगा।''

अधिकारियों ने उसकी बात मान ली। उन्होंने सागर सिंह को हथकड़ी और बेड़ियों से मुक्त करने का आदेश दिया और यह भी आदेश दिया कि उसे भरपेट भोजन दिया जाए तथा उसकी कड़ी निगरानी की जाए।

बख्शीश अली ने अधिकारियों का आदेश तो सुना, लेकिन उसने सागर सिंह के प्रति कुछ ज्यादा ही नरमी दिखाई। उसने सागर सिंह को अच्छा भोजन कराया, मगर रात को मौका पाकर सागर सिंह जेल से भाग खड़ा हुआ। इससे बख्शीश अली बहुत परेशान हुआ। यह खबर जब अंग्रेज अधिकारियों को पता चली तो उन्होंने बख्शीश अली की जूतों से पिटाई की। इस अपमान को बख्शीश अली बड़ी मुश्किल से बरदाश्त कर पाया। बाद में यह खबर देश के विभिन्न क्षेत्रों में फैल गई।

महारानी लक्ष्मीबाई को भी उस घटना का पता चला। उन दिनों मोतीबाई उनके पास भजन सुनाने के लिए आया करती थी। वह थी तो मुस्लिम, पर रानी के प्रति अपार श्रद्धा रखती थी। उसके साथ जूही नाम की एक युवती भी रानी के पास आया करती थी। जूही भी मुस्लिम संप्रदाय की थी और वह भी रानी की परमभक्त थी।

जूही के पड़ोस में कर्नल जमां खां की हवेली थी। जमां खां गंगाधर राव की सेना का एक अधिकारी था। उसी की हवेली में इन दिनों तात्या का प्रवास चल रहा था। इसलिए जूही और तात्या की मुलाकात होती रहती थी। दोनों रानी के महल में भी एकाध बार एक-दूसरे से मिल चुके थे। रानी और तात्या ने उससे कहा था कि वह हिंदुस्तानी सिपाहियों के निवास स्थानों पर अपना आवागमन जारी रखे। इसलिए जूही रोज उनके निवास स्थानों पर जाया करती थी। उसे देखकर अंग्रेज अधिकारियों को यह लगता था कि वह हिंदुस्तानी सिपाहियों को भजन सुनाने आती है, जबकि वह उन सिपाहियों के पास राजनीतिक उद्देश्य से यह जानने के लिए जाती थी कि अंग्रेजों के राज में कहां क्या हो रहा है?

वह मौका पाने पर उन सिपाहियों को स्वराज्य की लड़ाई में कूदने की प्रेरणा देती रहती थी। जूही और मोतीबाई रानी की ओर से बड़ी चालाकीपूर्वक जासूसी कर रही थीं। नवाब अली बहादुर तक को

उन दोनों के जासूस होने की खबर नहीं थी। वह समझता था कि दोनों भजन सुनाने के लिए आती-जाती रहती हैं।

वह जानना चाहता था कि लक्ष्मीबाई के महल में कौन-कौन लोग आते हैं और वहां उनके बीच क्या-क्या बातें होती हैं। इसके लिए उसने मोतीबाई से संपर्क स्थापित करने का प्रयास किया। उसने अपने एक कार्यकर्ता पीर अली को मोतीबाई के पास भेजा।

"बाई जी।" पीर अली ने उसे फुसलाते हुए कहा—"आप महारानी को रोज भजन सुनाने जाती हैं। कभी-कभी आप हमारे नवाब साहब को भी कुछ गीत-गजल सुना दिया करें। उन्हें संगीत से बहुत लगाव है। आप एक बार उनके पास चलकर तो देखिए, कितनी खातिरदारी करते हैं नवाब साहब आपकी।"

"मेरा जीवन अभी तक पर्दे में बीता है, लेकिन अब मैंने पर्दा करना कम कर दिया है। यदि आपकी यही इच्छा है तो मैं नवाब साहब को गीत-गजल अवश्य सुनाऊंगी।" मोतीबाई ने बड़े उत्साह से कहा।

पीर अली उसे बहला-फुसलाकर एक दिन नवाब साहब की हवेली में ले गया। मोतीबाई नवाब के सामने शर्म के मारे पानी-पानी हो रही थी। नवाब ने उसका बड़ा सम्मान किया। फिर वे उसकी झूठी तारीफ करते हुए बोले—"आपकी कला का तो कोई जवाब नहीं है बाई जी। आप यहां लाज-शर्म मत कीजिए, इसे अपना ही घर समझिए।"

"लाज-शर्म करना तो मेरी पुरानी आदत है नवाब साहब! लेकिन मैं आपकी भावनाओं की कद्र करती हूं, क्योंकि आप हमारे अन्नदाता हैं।"

यह सुनकर नवाब साहब खुशी से गद्‌गद हो उठे। मोतीबाई ने उसी समय एक राग छेड़ दिया। वह बिना साजों के ही एक घंटे तक गाती रही।

''महारानी आपसे किस तरह के गीत सुनती हैं।'' नवाब साहब ने मोतीबाई से पूछा।

''महारानी मीराबाई के भजन सुनती हैं।'' मोतीबाई ने जवाब दिया।

''महारानी का हृदय बड़ा उदार है।'' नवाब ने कहा—''वे दान-पुण्य भी बहुत करती हैं।''

''गुस्ताखी माफ हो नवाब साहब! महारानी से मिलने तरह-तरह के लोग आते अवश्य हैं, लेकिन मैंने उन्हें किसी को दान-पुण्य देते हुए नहीं देखा।'' मोतीबाई ने लजाते हुए कहा।

''अब तो महारानी ने पर्दा करना भी छोड़ दिया है। आखिर उन्हें पहाड़ों और जंगलों में घूमने में इतना मजा क्यों आता है?'' नवाब ने हंसते हुए कहा।

''महारानी ने मुझे जंगलों में ले जाकर घुड़सवारी सिखाई है।''

''हमने सुना है कि वे स्त्रियों को हथियार चलाने का भी प्रशिक्षण देती हैं। क्या आपने भी उनसे हथियार चलाना सीखा है।''

''मैं अभी सीख रही हूं।''

''लेकिन क्यों? आपको क्या जरूरत है इस सबकी? और फिर अपने घर के काम-काज से फुरसत कैसे मिलती है आपको?''

''मुझे हथियार चलाने का शौक है। इसलिए मैं प्रशिक्षण ले रही हूं। रही बात समय की, तो समय मुझे बड़ी सहजता से मिल जाता है, क्योंकि और स्त्रियों की तरह मुझे ज्यादा काम नहीं करने पड़ते।''

''आप महान हैं बाई जी। घुड़सवारी सीखने के बाद से आपका स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन बहुत अच्छा होता जा रहा है। मैं सच कह रहा हूं। आपके चेहरे पर अब एक अजीब सा आकर्षण दिखाई पड़ता है।'' नवाब साहब ने मोतीबाई की प्रशंसा करते हुए कहा।

''नवाब साहब! आप ख्वाहमख्वाह मेरी इतनी तारीफ क्यों कर रहे हैं।'' तनिक लजाकर मोतीबाई बोली।

''ये तारीफ नहीं, हकीकत है मोतीबाई।''

''क्या नवाब साहब! आप भी...'' मोतीबाई मुस्कराकर रह गई।

''महारानी से मिलने अब तक उनके पास कौन-कौन आ चुका है।'' नवाब ने मुस्कराते हुए पूछा।

''बहुत लोग मिल चुके हैं। उनसे मिलने वालों में तात्या टोपे और दीवान जवाहर सिंह प्रमुख हैं। बाकी लोगों का नाम मुझे याद नहीं है। अगर आप कहेंगे तो आगे से मैं सबका नाम नोट करके रखूंगी।''

''अवश्य मोतीबाई! तुम रुपये-पैसे की चिंता मत करना। हम तुमसे बाहर नहीं हैं। जब भी जरूरत पड़े हमें याद कर लेना। महारानी से मिलने जो भी आए, उसका नाम पता बताती रहना।''

''जैसी आपकी आज्ञा नवाब साहब।''

''आजकल वहां क्या बातें चल रही हैं? कुछ पता हो तो?''

''नवाब साहब! महारानी दामोदर राव का जनेऊ करना चाहती हैं। इसी विषय पर वहां बातें चल रही हैं।''

''और क्या हो रहा है वहां?''

''वहां पुराने लोगों को बुलाया जा रहा है। ताकि दामोदर का जनेऊ धूमधाम से हो सके।''

''अब आप कहां जाएंगी?''

''मैं महारानी को भजन सुनाने जाऊंगी।''

कुछ देर बाद वह महारानी के महल में पहुंची। उसने महारानी को भजन का एक पद गाकर सुनाया। फिर वह बातें करने लगी।

''रानी साहिबा! मैंने आपके खिलाफ एक और जासूस का पता लगाया है।'' मोतीबाई ने कहा।

''कौन है वह जासूस?'' महारानी ने पूछा।

''वह जासूस है। नवाब अली बहादुर।''

''मुझे पहले से ही उस पर संदेह था। क्या बात की उस जासूस ने।''

महारानी के कहने पर उसने सारी बातें कह सुनाईं।

''तुम्हें इसी तरह से अब खुदाबख्श को भी परखना है।'' पूरी बात सुनकर महारानी ने मुस्कराते हुए कहा।

''जैसी आपकी आज्ञा।''

''आजकल जूही कैसा काम कर रही है?''

''जूही भेद लेने में बड़ी माहिर है रानी साहिबा। वह बड़ी चालाकी से भेद लेने का काम कर रही है।''

इतना कहकर मोतीबाई वहां से हट गई।

जब महारानी मरदानी पोशाक पहन कर घुड़सवारी करने निकलतीं, उस समय वे अपने सिर पर लोहे का कुला धारण करती थीं। कुला के ऊपर वे साफा बांधती थीं। उनके दोनों बगल में पिस्तौल और तलवारें दिखाई पड़ती थीं। कभी-कभी वे अपने एक-एक हाथ में बर्छी लेकर घोड़े पर बैठती थीं। इस सबके बावजूद वे अपने घोड़े को सरपट दौड़ाती थीं। उनके सिर के उलझे हुए बाल कुला लगाने में बाधा डालते थे। इसलिए रानी ने यह विचार बनाया कि काशी जाकर मुंडन करा लिया जाए, लेकिन उन्हें पता चला कि बिना डिप्टी कमिश्नर की अनुमति के काशी यात्रा नहीं हो सकती।

उन्होंने अनुमति के लिए एक प्रस्ताव कमिश्नर के पास भेजा, मगर अनुमति नहीं मिल सकी। इसका कारण यह था कि कमिश्नर महारानी से चिढ़ा हुआ था। कमिश्नर के इस फैसले को सुनकर कई लोगों को गहरा धक्का लगा। फिर रानी ने यह संकल्प लिया कि जब तक हिंदुस्तान स्वतंत्र नहीं होगा, तब तक मैं अपना मुंडन नहीं कराऊंगी। उनका यह संकल्प जब उनकी सहेलियों को पता चला तो वे बड़ी खुश हुईं।

समय अपनी अबाध गति से चलता रहा।

महारानी की योजनाएं बनती रहीं। अंग्रेजी खेमे में जो भी होता, महारानी को पता चल जाता। रानी के जासूस अंग्रेजी सरकार के कार्यों पर पूरी नजर रखे हुए थे।

रानी ने समयानुसार दामोदर राव का यज्ञोपवीत करना निश्चित किया और प्रमुख लोगों को निमंत्रण भेजने का आदेश भी दिया। यज्ञोपवीत संस्कार पर एक लाख रुपया खर्च होने का अनुमान लगाया गया। इतना धन रानी के पास नहीं था, लेकिन यज्ञोपवीत कराना जरूरी था। उसी समय रानी को यह सूचना मिली कि अंग्रेजों की हिंदुस्तानी सेना में असंतोष फैल गया है।

सरकारी खजाने में दामोदर के नाम दस लाख रुपये जमा थे। जमाराशि में से एक लाख रुपये निकालने के लिए रानी ने अपनी ओर से एक अर्जी लगाई।

सरकारी अधिकारियों ने रानी की अर्जी का जवाब देते हुए कहा कि आप पैसा तभी निकाल सकती हैं जब नगर के चार गणमान्य व्यक्ति आपके बेटे की ओर से गवाही दें, क्योंकि दामोदर अभी नाबालिग है। इस पर झांसी के कई गणमान्य व्यक्ति गवाही देने को तैयार हो गए। इस प्रकार उनके गवाही देने के बाद ही रानी को सरकारी खजाने से एक लाख रुपया मिला। उचित समय पर दामोदर का यज्ञोपवीत संस्कार संपन्न हुआ।

इस मौके पर नवाब अली बहादुर भी उपस्थित थे। इनके अलावा समारोह में झांसी की जनता ने भी बड़े उत्साह के साथ भाग लिया था। इस कार्यक्रम के बाद खुदाबख्श, जवाहर सिंह, रघुनाथ सिंह, तात्या टोपे और नाना साहब ने मिलकर एकांत में एक बैठक की। बैठक में उनके आस-पास रानी की सहेलियां भी उपस्थित थीं। रानी ने दामोदर के यज्ञोपवीत को एक छोटे यज्ञ की संज्ञा देते हुए कहा—"आप सभी

के सहयोग से हमारे यहां एक छोटा सा यज्ञ सफल हो गया है, लेकिन अभी हमें बड़े यज्ञ को सफलतापूर्वक पूरा करना बाकी है।''

''बड़े यज्ञ के लिए सामग्री और प्रकांड पंडितों का प्रबंध कर लिया गया है। इसके अलावा यज्ञ की सामग्री ढोने वाले उत्तम घोड़े भी तैयार कर लिए गए हैं।'' नाना साहब ने रानी की ओर देखते हुए कहा।

''यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं सीधी भाषा में बात करूं।'' तात्या ने रानी से पूछा।

''अवश्य! घबराने की कोई बात नहीं। यहां सब अपने ही आदमी हैं। बाहर स्त्रियों का सख्त पहरा भी है। हमारे बीच यहां कोई नहीं आ पाएगा।'' रानी ने कहा।

''रानी साहिबा।'' तात्या बोला—''अंग्रेजों द्वारा इस्तेमाल में लाए जा रहे चर्बी के कारतूस अब लगभग बंद हो गए हैं, लेकिन हिन्दू-मुस्लिम के बीच नफरत की भावना जरा भी कम नहीं हुई है।''

''नहीं तात्या जी।'' खुदाबख्श बोला—''चर्बी वाले कारतूस अंग्रजों ने अभी तक बंद नहीं किए हैं। यही कारण है जो मुस्लिम सिपाहियों में बड़ी चिढ़ पैदा हो गई है। ऐसा लगता है कि अब सरकारी कार्यवाही शीघ्र आरंभ कर दी जाएगी।''

''हम बुंदेलखंड से कार्यवाही को आरंभ करेंगे।'' रघुनाथ सिंह ने कहा।

''अभी नही रघुनाथ सिंह।'' रानी ने अपना दायां हाथ ऊपर उठाते हुए कहा—''अभी हमारी सेना का गठन पूरा नहीं हुआ है। गठन पूरा होने के बाद एक निश्चित समय पर योजनानुसार हम अपने कार्य को आरंभ कर देंगे।''

बैठक में आगामी योजनाओं पर विचार-विमर्श किया गया। उसके बाद सभा विसर्जित हो गई।

स्वराज्य के लिए लड़ाई की तैयारियां

अंग्रेजों ने झांसी में सैनिकों की एक छावनी बना रखी थी। इस छावनी में हिंदुस्तानी सैनिक और अधिकारी रहते थे। यहां नित्य-प्रति जूही का आगमन होता था। जूही अपने नृत्य-गीत से सैनिकों को मंत्रमुग्ध कर देती थी। चूंकि उसका आना-जाना अब यहां बहुत अधिक बढ़ गया था, इसलिए उसकी कला में और अधिक निखार आ गया था। वह सेना के अधिकारियों को मंत्रमुग्ध करके अंग्रेजों की गुप्त बातों के भेद लिया करती थी।

एक दिन छावनी में जूही का नृत्य-गीत चल रहा था। तभी वहां उसकी कला का आनंद लेने के लिए कप्तान डनलप आया। डनलप को उसके जासूसों ने खबर दी थी कि छावनी में नर्तकियों का आना-जाना लगा रहता है। वे अधिकारियों से बहुत घुल-मिल कर बातें करती हैं।

डनलप को देखते ही जूही कुछ देर के लिए सकपका गई। फिर उसने अपने आपको नियंत्रण में कर लिया। कुछ देर बाद जूही का नृत्य-गीत बंद हो गया। तभी डनलप ने उससे सवाल किया—

"इस छावनी से तुम कितनी कमाई कर लेती हो?"

"गुजारा हो ही जाता है हुजूर।" जूही ने जवाब दिया।

"क्या तुम्हारा उद्देश्य पैसा कमाना ही है?"

"जी हुजूर।"

"बको मत! हम जानते हैं तुम्हारा उद्देश्य क्या है?" डनलप ने रोब दिखाते हुए कहा—"आज के बाद इस छावनी में कभी कदम मत रखना।"

यह सुनते ही जूही के चेहरे पर उदासी छा गई। वह छावनी से बाहर आ गई। मन ही मन कहने लगी—'बड़ा आया कप्तान कहीं का। जिस दिन मेरे हाथ में घोड़े की लगाम आई उस दिन तुझे अपने बंदूक की गोली का मजा चखाऊंगी।'

उसके जाने के बाद डनलप ने छावनी के अधिकारियों को निर्देश दिया कि यहां नर्तकियों का आना बंद किया जाए। और ऐसा निर्देश देने के बाद वह वापस चला गया। लेकिन सैनिकों से जूही का अपमान बरदाश्त नहीं हुआ। वे कप्तान के प्रति गुस्सा जाहिर करने लगे।

शाम को जूही ने रानी के पास पहुंचकर सारी बातें कह सुनाईं। इस पर रानी ने विचार किया—'हमारे इरादे अटूट हैं। मैं अंग्रेजों को यह दिखा दूंगी कि भारत में अब भी बहुत शक्ति शेष बची हुई है। मैं जान पर खेल कर स्वराज्य के लिए लड़ूंगी। लड़ाई में यदि मेरी मृत्यु भी हो जाती है तो मैदान में मुझसे बड़ा योद्धा आकर खड़ा हो जाएगा और वह स्वराज्य प्राप्त करके ही दम लेगा।' तभी पहरेदार स्त्रियों ने दरवाजे पर चहल-कदमी की। रानी ने उन्हें अपने पास बुलाकर पूछा—''कहिए, क्या खबर है?''

''रानी साहिबा! मोतीबाई आपके दर्शन करना चाहती है। उन्होंने विनम्रतापूर्वक निवेदन किया है कि उन्हें समय देने की कृपा की जाए।'' एक पहरेदार स्त्री ने कहा।

''उसे आने दो।'' रानी ने आदेश दिया।

मोतीबाई महारानी के सामने उपस्थित हुई। उसने एक चौकी पर आसन ग्रहण किया।

''रानी साहिबा! आप कृपया इस पत्र पर गौर फरमाइए।'' मोतीबाई ने पत्र को रानी की ओर बढ़ाते हुए कहा।

''ये कैसा पत्र है मोतीबाई।'' रानी ने चकित होते हुए पूछा।

''यह पत्र तात्या जी ने मुझे दिया है। ऐसे कई पत्र आज छावनी में आए हुए हैं। इस पर तात्या जी आपसे कुछ विचार-विमर्श करना चाहते हैं।'' मोतीबाई ने कहा।

रानी पत्र पढ़ने लगीं। पत्र में लिखा था—'बरदाश्त की सीमा होती है। रानी साहिबा! आप कब तक अपने कलेजे पर पत्थर रखे

रहेंगी। उठो! अपने धर्म के लिए कट मरो। जिन अंग्रेजों ने देश को गुलामी की बेड़ियों में जकड़ रखा है, उन्हें देश से निकाल फेंको और भारत की स्वतंत्रता निश्चित करो।'

पत्र पढ़ने के बाद रानी ने तात्या से भेंट की—''यह पत्र हमें समय से पहले प्राप्त हुआ है तात्या जी।''

''जी हां रानी साहिबा। अभी सेना के गठन का कार्य पूरा नहीं हुआ है। इसलिए इस पत्र के अनुसार चलना अभी ठीक नहीं, अन्यथा लोग बेमौत मारे जाएंगे। अत: अभी हमें कार्यवाही को रोकना होगा।'' तात्या ने कहा।

''युद्ध सामग्री का प्रबंध हुआ कि नहीं?''

''हो गया है रानी साहिबा। इसलिए मैं आपसे कार्यवाही की तारीख निश्चित करने आया हूं।''

''आपने कुछ सोचा है इस बारे में?''

''जी रानी साहिबा। तारीख 31 मई और दिन रविवार।''

''अभी तो चार महीने बाकी हैं। कोई बात नहीं। आपने सही तारीख निश्चित की है। 31 मई को पूरे देश में एक साथ कार्यवाही आरम्भ कर दी जाएगी।''

''मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि तब तक हमारे देश की जनता अपने आप पर नियंत्रण रखे।''

समय ने करवट बदली। गर्मी का मौसम आया। स्वाधीनता की लड़ाई के लिए रानी ने कमल के फूल और रोटी को चिह्न के रूप में प्रकट किया। कमल और रोटी को एक गांव से दूसरे गांवों में भेजा जाने लगा। इससे हिन्दू-मुस्लिम में एकता देखने को मिली। उसी दौरान मेरठ में हुए एक बम विस्फोट में कई लोग घायल हो गए। अभी 31 मई की तारीख दूर थी। स्थिति को देखते हुए मेरठ और दिल्ली की हिंदुस्तानी फौज ने लाल किले को अपने कब्जे में कर लिया। बहादुरशाह

ने भारत के सम्राट पद पर बैठने के बाद शीघ्र ही गोवध बंद करने का आदेश जारी किया।

अब समस्त उत्तर भारत में क्रांति की आग दहकने लगी थी। इसकी सूचना झांसी में कप्तान डनलप को मिली। तभी से रानी ने अपने महल में लोगों का आना-जाना बहुत कम कर दिया। सिर्फ मोतीबाई को रानी के पास आने-जाने की छूट मिली थी। वह रानी तक प्रमुख समाचार पहुंचाती थी। उसे ये समाचार खुदाबख्श और रघुनाथ सिंह के संपर्क में रहने से प्राप्त होते थे।

4 जून को झांसी में क्रांति की संभावना साफ नजर आने लगी थी, क्योंकि एक हलवदार कुछ सैनिकों को लेकर झांसी के छोटे किले में घुस गया था। यह किला झांसी के बड़े किले से लगभग एक मील की दूरी पर स्थित है। इस किले को अंग्रेज तारागढ़ कहते थे। यहां अंग्रेजों ने अस्त्र-शस्त्र छुपा रखे थे और रुपया-पैसा भी। जिसे लेकर सैनिक वहां से पलायन कर गए। खबर पाते ही डनलप अपनी फौज लेकर उनसे मुकाबला करने के लिए आया। पर जब उसे किले में युद्ध का सामान नहीं मिला तो वह निराश होकर लौट गया।

उस घटना की खबर कमिश्नर को मिली। उसने छावनी के सभी सैनिकों को सपरिवार किले के अन्दर पहुंचने को कहा। लेकिन जब उन्होंने किले की ओर प्रस्थान किया तो उन्हें रानी की तेजस्विता और धार्मिकता की याद आई।

गार्डन कई अंग्रेजों को लेकर रानी के पास पहुंचा और विनयपूर्वक बोला—''रानी साहिबा! यदि हम पर कोई आपत्ति आए तो आप दया करना।''

''मैं आपके कहने का तात्पर्य समझ रही हूं, लेकिन मेरे पास पर्याप्त हथियार नहीं हैं कि मैं आपकी मदद कर सकूं। यदि आप लोग अपनी सहमति जताएं तो मैं जनता की रक्षा के लिए अपनी सेना को

मजबूत कर लूं।'' रानी ने अंग्रेजों की बात का जवाब देते हुए कहा।

रानी की बातों से सहमत होकर डनलप वापस लौट गया। फिर उसने अंग्रेज अधिकारियों के साथ एक बैठक में हिस्सा लिया। बैठक समाप्त होने के बाद डनलप को एक अंग्रेज सैनिक के साथ पल्टन में भेजा गया। उसे पल्टन के सिपाहियों को लताड़ने का आदेश मिला था। उसने वहां सिपाहियों को खूब लताड़ा। यह अपमान सिपाहियों से बरदाश्त नहीं हुआ। इसलिए नायक काले खां ने डनलप को गोली मार दी। उसके धराशायी होते ही अंग्रेजों में भगदड़ मच गई। गार्डन भागा-भागा रानी के पास आया। उसने रानी की सहेली मुंदर से कहा— ''आप रानी साहिबा से मेरी ओर से यह प्रार्थना कीजिए कि वे हमारी स्त्रियों और बच्चों को अपने महल में शरण दें।''

मुंदर ने उसकी बात रानी के समक्ष रखी। रानी ने गार्डन की बात को मंजूरी दे दी। गार्डन ने अंग्रेज महिलाओं व बच्चों को शीघ्र ही महल के भीतर कर दिया। यहां रानी ने उनको प्रेमपूर्वक भोजन कराया। मगर कुछ दिनों बाद कमिश्नर ने उन बच्चों को महल से हटाकर किले में रखवा दिया।

रानी के आदेश से पहले ही युद्ध आरम्भ हो गया था। जिस किले में अंग्रेज छुपे थे, उस किले पर रानी के सिपाही आक्रमण करते रहे। परंतु अंग्रेजों ने अपनी गोलियों की बौछारों से उन सिपाहियों को पीछे धकेल दिया। अगले दिन शाम को लड़ाई में कुछ ढील देखने को मिली। अंग्रेज भूख से छटपटा रहे थे। उन्होंने भोजन के लिए रानी के पास संदेश भेजा। रानी को उन पर दया आ गई और उसने उनके लिए दो मन की रोटियां बनवाकर सुरंग के माध्यम से किले तक पहुंचवाईं। उनकी सहेलियों ने जब रोटी लेकर किले में प्रवेश किया तो अंग्रेज अधिकारियों ने उन्हें प्रणाम किया और रोटी खाकर अपनी भूख मिटाई। वे रानी की इस प्रकार की दया को कभी भूल नहीं पाए।

युद्ध की जोरदार शुरुआत

स्वाधीनता का युद्ध दिन-प्रतिदिन जोर पकड़ता जा रहा था। गार्डन किले के उत्तरी फाटक पर छिपा था। वह रह-रहकर रानी के सैनिकों पर गोलियां चला रहा था। तभी रानी के सैनिकों को झांसी का एक तीरंदाज मिल गया। तीरंदाज ने अपने एक ही तीर से गार्डन को मौत के घाट उतार दिया। उसके मरने के बाद अंग्रेजी खेमे में अफरा-तफरी मच गई।

उधर, किले के शंकरगढ़ वाले कोने पर नायक काले खां ने अंग्रेजों पर भयानक धावा बोल दिया। वह अपनी सेना लेकर किले के अंदर घुस चुका था। उसके बुलंद हौसलों को देखकर अंग्रेजों ने आत्मसमर्पण कर दिया। अंग्रेज कमिश्नर ने वहां से सागर जाने की बात कही, पर काले खां ने उसे और उसकी सेना को बंदी बना लिया। वह अंग्रेजों को अपने सिपाहियों के हवाले करके वहां से चला गया। तभी जेल के दरोगा बख्शीश अली का आगमन हुआ। बख्शीश अली सिपाहियों से बोला—"मुझे काले खां ने आदेश दिया है कि अंग्रेजों को झोकन बाग ले आओ।"

झोकन बाग झांसी नगर के कोट से बाहर है। सिपाही सभी अंग्रेजों को लेकर झोकन बाग आए। फिर बख्शीश अली ने उन सिपाहियों को आदेश देते हुए कहा—"देखते क्या हो। काले खां का आदेश है, भून डालो इन सबको। ये वही कमिश्नर है, जिसने मुझे जूतों से मारा था। पहले इसे कुत्ते की मौत मारो।"

सिपाहियों ने सभी अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया। जब काले खां वहां आया तो वह अंग्रेजों के शवों को देखकर हैरान रह गया।

"आज के बाद बिना मेरे से पूछे किसी पर वार मत करना। जो हुआ उसे भूल जाओ। मगर आगे से याद रखना।" काले खां ने सिपाहियों से कहा।

सभी सिपाही उसके कहने पर रानी के महल की ओर चल पड़े उनके चेहरे पर अनुशासनहीनता और पागलपन साफ झलक रहा था। कुछ सिपाहियों ने क्रोध में आकर झांसी शहर को लूटने की बात कही। तभी काले खां चिल्लाया—''खबरदार, जो इस शहर को लूटने की बात की तो। यहां महारानी लक्ष्मीबाई का राज है।''

सिपाही रानी की जय-जयकार करने लगे। तभी रानी के महल का दरवाजा खुला। रानी हाथ जोड़कर खड़ी थीं। उनकी सशस्त्र सहेलियां उनके पीछे थीं। सिपाहियों ने रानी को विधिवत प्रणाम किया। रानी ने पहले उन्हें आशीर्वाद दिया। बाद में उन्हें चुप रहने को कहा।

''नायक काले खां।'' रानी ने चिल्लाते हुए कहा।

''जी रानी साहिबा।'' काले खां ने प्रणाम करते हुए कहा। उसने पहले तो रानी की आंखों में देखा। फिर शर्म के मारे उसकी आंखें झुक गईं।

''काले खां! सिपाहियों की तलवारों में ये खून कैसे लगा?'' रानी ने पूछा।

''रानी साहिबा! इन तलवारों से सिपाहियों ने अंग्रेजों को मौत के घाट उतारा है।''

''इतना बड़ा दुष्कर्म? इस तरह के दुष्कर्मों से तुम स्वराज्य और बादशाही स्थापित करोगे?''

''रानी साहिबा...।'' इतना कहकर काले खां चुप हो गया।

''उल्टे तुम लोगों में से कुछ लोग झांसी को लूटने की बात कर रहे थे।''

''क्षमा कर दो रानी साहिबा। अब बिना आपके आदेश के कुछ नहीं होगा। यदि हुआ भी तो हम तोप के मुंह पर बैठकर अपनी जान दे देंगे।''

"शाबाश काले खां शाबाश।" रानी ने उसे माफ करते हुए कहा—"तुम सब छावनी में जाओ। शाम को तुम्हें आदेश मिलेगा कि क्या करना है?"

"रानी साहिबा! सिपाही भूखे हैं। कृपया उनके भोजन की व्यवस्था की जाए।"

"ये लीजिए।" रानी ने अपने गले से हीरे का हार निकालकर काले खां के हाथ में रखते हुए कहा—"इसे बेचकर पैसा प्राप्त कर लेना, क्योंकि मेरे पास अंग्रेजों ने एक भी रुपया नहीं छोड़ा है। खैर कोई बात नहीं है। तुम इस हार को ले जाओ। तुम सभी को दिल्ली जाना है। मगर रास्ते में लूटपाट बिल्कुल मत करना। हिन्दू सैनिकों को गंगा की कसम है और मुस्लिम सैनिकों को कुरान की कसम है। सभी ईमानदारी से पेश आना। आवश्यकता पड़ने पर मुझे सूचित करना। मैं तुम्हारी हर आवश्यकता पूरी करूंगी।"

सभी सैनिक कृतज्ञतावश रानी के सामने झुक गए। वे पहले छावनी आए। फिर वहां से अस्त्र-शस्त्र लेकर वे दिल्ली की ओर निकल पड़े।

अगले दिन रानी के महल में झांसी के जागीरदार, मुखिया, सेठ-साहूंकार और पंच आदि एकत्र हुए। रानी इनके पीछे पर्दे के अंदर बैठी हुई थीं। उन्होंने सबकी बातें सुनने के बाद अपने मन की बात कही—"मैं बड़ी मुश्किल से इस नगर को लूटपाट से बचा पाई हूं। फिर भी यहां लूटपाट का संकट बरकरार है। आप लोगों को यहां इसलिए बुलाया गया है कि जनता के कष्ट को कैसे दूर किया जाए।"

इस पर वहां मौजूद सभी लोगों ने अपने-अपने सुझाव व्यक्त किए। सभी ने रानी को राज करने के लिए कहा। उनका मानना था कि जब तक झांसी राज्य पर रानी का राज नहीं होगा, तब तक वहां की जनता का कष्ट दूर नहीं हो सकता। रानी ने सभी लोगों का समर्थन

करते हुए कहा—''मेरा बड़ा सौभाग्य है, जो आप लोग मुझे इतना बड़ा दायित्व सौंप रहे हैं। ईश्वर मुझे इतनी शक्ति दे कि मैं आपकी उम्मीदों पर खरी उतर सकूं।''

तभी वहां रानी की जय-जयकार होने लगी। कुछ देर बाद तोपची गुलाम गौस खां रानी के सामने हाथ जोड़कर आ खड़ा हुआ। रानी ने उससे कहा—''आज मैं तुम्हें तोपों को संभालने का अधिकार प्रदान करती हूं। जिन तोपों को अंग्रेजों ने बिगाड़ दिया है, तुम उन्हें शीघ्र तैयार करो, ताकि वे तोपें लड़ाई के समय अपने जलवे दिखा सकें।''

''मेरी एक गुजारिश है रानी साहिबा।'' तोपची बोला।

''नि:संकोच कहिए।'' रानी ने कहा।

''रानी साहिबा! आज का दिन हमारे लिए बड़ा शुभ है। इसलिए कृपया हमें सलामी दागने की इजाजत दी जाए।''

''इजाजत है।'' रानी बोलीं।

तोपची ने जाकर तोपों का निरीक्षण किया। जो तोपें चलने योग्य थीं, उनसे तोपची ने सलामी दागी। उसके बाद रानी ने किले पर भगवा झंडा फहराया। उन्होंने भाऊबख्शी नामक व्यक्ति को नई तोपें ढालने का काम सौंपा और कई पदाधिकारी भी नियुक्त किए। घुड़सवारों की प्रमुख रानी स्वयं बनीं। उन्होंने जासूसी विभाग मोतीबाई के अधीन रखा, जबकि जूही को मोतीबाई का सहायक नियुक्त किया गया। बाद में रानी ने सभी को अपना कार्य करने का आदेश जारी कर दिया।

अभी रानी को राज्य हाथ में लिए मात्र पांच दिन हुए थे। तभी उनके पास मोतीबाई ने सूचना भेजी कि सरदार सदाशिव राव ने करेरा किले पर आक्रमण कर दिया है। सदाशिव राव, गंगाधर राव का रिश्तेदार था। उसने अपने आपको झांसी का राजा घोषित कर दिया। उसके दिमाग में यह बात थी कि लक्ष्मीबाई स्त्री है, इसलिए वह मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। उसके राजा बनने की खबर पाकर रानी ने

अपनी सेना तैयार की। रानी के योद्धा नायकों ने करेरा किले की ओर प्रस्थान किया। उनकी तीनों सहेलियां भी सदाशिव राव की ताकत को आजमाने के लिए करेरा किले की ओर कूच कर गईं।

बाद में रानी भी अपनी सेना लेकर वहां जा पहुंचीं। उन्होंने किले को चारों ओर से घेर लिया। इससे सदाशिव की जान का संकट उत्पन्न हो गया। वह किसी तरह से अपनी जान बचाकर वहां से भागा। भागते-भागते वह सिंधिया के राज्य नश्वर पहुंचा। यहां उसने सिंधिया से मदद करने की प्रार्थना की। उस समय राजा सिंधिया नाबालिग थे। उन्होंने अपनी एक सेना करेरा किले की ओर भेज दी, लेकिन उनके सैनिकों को सफलता नहीं मिली। रानी लक्ष्मीबाई ने सिंधिया के राज्य को घेरकर सदाशिव को बंदी बना लिया।

उन दिनों डाकू सागर सिंह का अत्याचार बहुत बढ़ गया था। उसने झांसी के कई गांवों में लूटपाट मचा रखी थी। उसका उत्पात रानी से नहीं देखा गया। इसलिए रानी ने खुदाबख्श को बुलवाया और उसे आदेश दिया—"खुदाबख्श! तुम सिपाहियों को अपने साथ ले जाओ और सागर सिंह को जिंदा या मुर्दा हमारे सामने पेश करो।"

"जो आज्ञा रानी साहिबा।" खुदाबख्श ने शीश झुकाते हुए कहा।

"इस काम के लिए तुम्हें कितना वक्त चाहिए।" रानी ने पूछा।

"मैं कोशिश करूंगा रानी साहिबा कि यह काम जल्द से जल्द हो, मगर थोड़ी कठिनाई महसूस हो रही है।"

"कैसी कठिनाई?"

"बारिश का मौसम है रानी साहिबा। इसलिए समय कुछ ज्यादा भी लग सकता है। मगर आप चिंता न करें। मैं जल्दी ही कामयाब होकर लौटूंगा।"

इतना कहकर खुदाबख्श वहां से चला गया।

रानी अपने महल में पहुंचीं, उन्होंने अपनी सहेलियों से पूछा—

''मूसलधार बारिश में क्या तुम घोड़ा दौड़ा सकोगी ?''

''जी हां रानी साहिबा।'' एक सहेली मुन्दर ने जवाब दिया— ''लेकिन पहले खुदाबख्श के समाचार का इंतजार कर लो। फिर हम वहां जाने का कार्यक्रम बनाएंगे।''

मूसलधार बारिश हो रही थी। खुदाबख्श अपने सिपाहियों सहित बीच रास्ते में फंसा हुआ था। अगले दिन जब बारिश बंद हुई तो वह अपनी पलटन को लेकर रावली की ओर चल पड़ा। सागर सिंह का मकान रावली की पहाड़ियों पर था। लोग उसके मकान को हवेली कहते थे। सागर सिंह भोजन करने के बाद अपनी हवेली में आराम फरमा रहा था। तभी खुदाबख्श ने उस पर धावा बोल दिया। दोनों ओर से गोलियां चलने लगीं। देखते ही देखते खुदाबख्श के कई सिपाही घायल हो गए। इतने में खुदाबख्श अपने बचे सिपाहियों को लेकर सागर सिंह की हवेली पर चढ़ गया। कुछ देर बाद वह हवेली के आंगन में कूद पड़ा।

तभी सागर सिंह अपनी तलवार लेकर उससे भिड़ गया। उसने खुदाबख्श को अपनी तलवार के प्रहार से घायल कर दिया। फिर सागर सिंह हवेली का दरवाजा खोल कर वहां से रफूचक्कर हो गया।

सिपाही घायल खुदाबख्श को लेकर बरवा सागर पहुंचे। यहां रात को उसकी मरहम-पट्टी की गई। सुबह उस घटना का समाचार रानी को मिला।

''रानी साहिबा! खुदाबख्श घायलावस्था में हैं। सागर सिंह उन्हें घायल करने के बाद अपनी हवेली से निकल भागा है। अपने कुछ सिपाही भी घायल हुए हैं और कुछ सिपाही घायल खुदाबख्श का बरवा सागर में उपचार करवा रहे हैं।'' संदेश वाहक ने संदेश पढ़कर सुनाया।

''खुदाबख्श को ज्यादा चोट तो नहीं आई है।'' रानी ने संदेशवाहक से पूछा।

''जी नहीं रानी साहिबा। ज्यादा चोट तो सिपाहियों को आई है।'' संदेशवाहक बोला।

कुछ देर बाद संदेशवाहक को वहां से विदा कर दिया गया। फिर रानी, मोतीबाई को लेकर अपनी सहेलियों से मिली।

''कल तुम सबको मेरे साथ बरवा सागर चलना है।'' रानी ने अपनी सहेलियों से कहा।

''आप वहां न चलें तो ज्यादा अच्छा होगा रानी साहिबा, क्योंकि बेतवा नदी में बाढ़ आई हुई है और अभी अधिक बारिश होने की आशंका भी बनी हुई है, इसलिए आप यहीं रहें। हम लोग वहां चली जाएंगी।'' काशीबाई ने कहा।

''लेकिन मुझे अपने कर्तव्य का पालन करना है। इसलिए मैं घोड़े के बजाय हाथी पर बैठकर चलूंगी। तुम सब भी तैयार हो जाओ।''

''ठीक है रानी साहिबा।''

''आपकी आज्ञा हो तो मैं भी चलूं रानी साहिबा।'' मोतीबाई ने आग्रहपूर्वक कहा।

''देख लो। बाढ़ के कारण यदि नदी के किनारे नाव नहीं मिली तो तुम्हें नदी घोड़े पर बैठकर पार करनी पड़ेगी।''

''मंजूर है रानी साहिबा।''

रानी ने अपने घोड़े की लगाम पकड़ी और वे उस पर सवार होकर चल पड़ीं। उनके पीछे उनकी तीनों सहेलियां और मोतीबाई घोड़े पर सवार होकर जा रही थीं। इनके अलावा पच्चीस घुड़सवार और भी थे, जो उनके पीछे चल रहे थे। सभी जब बेतवा नदी के घाट पर पहुंचे तो वहां हवा आंधी की तरह चल रही थी। बाढ़ के कारण नदी इठला-इठलाकर बह रही थी। इस स्थिति में मल्लाहों ने वहां नाव भी नहीं लगाई। नाव को न देखकर कई घुड़सवार डरने लगे, लेकिन रानी ने अपने अदम्य साहस का परिचय दिया।

''देखते क्या हो—कूद पड़ो नदी में।''

इतना कहकर रानी अपने घोड़े को लेकर नदी में घुस गईं। फिर उनके सभी घुड़सवार भी नदी की धार को चीरते हुए दिखाई पड़े। रानी उनसे आगे निकल गई थीं। कुछ देर बाद उन्हें आगे किनारा दिखाई पड़ा।

कुछ देर बाद रानी के सभी साथी नदी के उस पार हो गए। सभी के कपड़े भीग गए थे। अत: वे नदी के किनारे अपने-अपने कपड़ों को सुखाने लगे।

इसी बहाने घोड़ों को आराम करने का मौका मिला। फिर कई घंटों के बाद रानी और उनके साथी बरवा सागर पहुंचे। यहां का किला विशाल झील के ऊपर है। इस किले को चंदेलों ने बनवाया था। रानी ने किले के अन्दर पहुंचकर घायल खुदाबख्श और अपने सिपाहियों को देखा। उनके स्नेह से सभी घायल सिपाही खुशी से गद्‌गद हो उठे। रानी को देखकर खुदाबख्श ने चारपाई से उठना चाहा, लेकिन वह उठ नहीं सका। रानी ने स्नेहपूर्वक उसके सिर पर अपना हाथ फेरा। फिर वे उसके पास रखी एक चौकी पर बैठ गईं।

''सागर सिंह भागकर कहां गया खुदाबख्श।'' रानी ने पूछा।

''रानी साहिबा! गांव के लोग डर के मारे उसका पता नहीं बता रहे हैं। मैं इतना जानता हूं कि सागर सिंह अपने साथियों के साथ पड़ोस के जंगल में छिपा है।'' खुदाबख्श ने कहा।

''तुम चिंता मत करो खुदाबख्श। हम सागर सिंह को ढूंढ़ लेंगे।''

''अब आप आ गई हैं तो चिंता किस बात की रानी साहिबा। मेरे घाव ठीक होने में एकाध दिन और लगेंगे, फिर मैं जी-जान से सागर सिंह के पीछे लगूंगा।''

''अभी तुम आराम करो खुदाबख्श। मैं तुम्हारी देख-रेख के लिए यहां मोतीबाई को छोड़ जाती हूं।''

इतना कहकर रानी वहां से चली गईं। मोतीबाई की आंखें आसुओं से भर गई थीं। उसके आंसुओं को देखकर खुदाबख्श बोला—''आपकी आंखों में आंसू के बजाय खुशी छलकनी चाहिए, क्योंकि झांसी राज्य का यह सिपाही सफल भले नहीं हुआ, मगर कुछ तो किया।''

''अब तुम्हें क्या तकलीफ है खुदाबख्श।'' मोतीबाई ने पूछा।

''रानी साहिबा के हाथ फेरते ही मेरा सारा दर्द दूर हो गया मोतीबाई। मानो उन्होंने मुझ पर अमृत रस बरसा दिया हो।''

''अब तो अपनी रानी साहिबा स्वयं सागर सिंह के पीछे लग गई हैं।''

''ये तो रानी साहिबा का बड़प्पन है मोतीबाई।''

इधर, मोतीबाई खुदाबख्श की देखभाल कर रही थी। उधर, रानी ने बरवा सागर के मुखिया और पंचों को बुलवाया। सभी ने आकर रानी को प्रणाम किया। उनके साथ एक थानेदार भी आया था। थानेदार ने बताया कि—''सागर सिंह खिसनी नामक जंगल में छिपा है।''

''आप सुबह तैयार रहिएगा थानेदार साहब। हम आठ बजे उस जंगल पर धावा बोलेंगे।'' रानी ने थानेदार से कहा।

सुबह रघुनाथ सिंह रानी का आदेश पाकर सेना सहित रावली गांव जा पहुंचा, जबकि रानी थानेदार को लेकर खिसनी के जंगल की ओर चल पड़ीं।

रघुनाथ सिंह ने उन्हें सूचित किया कि सागर सिंह अपनी हवेली पर नहीं है। फिर रानी ने जंगल को घेरने की योजना बनाई। उन्होंने जंगल में अपना एक जासूस भेज रखा था। जासूस ने रानी को बताया कि डाकू जंगल में एक कुटी बनाए हैं। वे वहां अपने खाने-पीने की व्यवस्था कर रहे हैं। उनके पास कुछ घोड़े भी हैं।

रानी ने खिसनी के घने जंगलों को चारों ओर से घेर लिया। उनके सिपाही चारों ओर तैनात दिखाई पड़ रहे थे। कुछ देर बाद सिपाहियों

ने डाकुओं की कुटिया पर आक्रमण किया। तभी सागर सिंह घोड़े पर बैठकर वहां से भागा। काशीबाई, मोतीबाई और सुंदर ने उसका पीछा किया। वह रानी की ओर बड़ी सतर्कता से चला आ रहा था। उसके गले में सोने का हार चमक रहा था, और हाथ में नंगी तलवार भी। उसे देखकर रानी को लगा कि सागर सिंह यही है। रानी का इशारा पाकर सुन्दर उस पर टूट पड़ी। लेकिन सागर सिंह ने अपने घोड़े को मोड़ लिया। फिर रानी और मुंदर ने उसका पीछा किया। कुछ दूर जाने के बाद सागर सिंह का घोड़ा रास्ते में ठोकर खा गया। वह गिरते-गिरते बचा। तभी रानी और मुंदर उसके करीब आ गईं। उसने रानी पर तलवार से वार किया पर उसका वार खाली गया। फिर रानी ने अपनी तलवार चलाकर उसकी तलवार के दो टुकड़े कर दिए। साथ ही उसका घोड़ा भी घायल हो गया। तभी रानी और मुंदर ने सागर सिंह को दबोच लिया। सागर सिंह ने उनके हाथों को अपने दांतों से काटना चाहा। उसी वक्त रानी ने उसे सावधान किया—'खबरदार! जो दांत चलाया तो तलवार तेरे हलक में होगी।'

सागर सिंह उनके हाथों से निकल नहीं सका। इतने में रानी के सभी साथी भी वहां पहुंच गए। उन्होंने सागर सिंह को रस्सी से बांध दिया। रानी ने रघुनाथ सिंह को सूचना भेजी कि सागर सिंह गिरफ्तार किया जा चुका है। रानी की इस वीरता की खबर दूर-दूर तक फैल गई। लोग रानी की वीरता की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे।

पहरेदारों की कड़ी सुरक्षा के बीच सागर सिंह को रानी के सामने पेश किया गया। वह रानी को प्रणाम करना चाहता था, लेकिन पहरेदारों ने उसे रोक लिया।

''रानी साहिबा!'' सागर सिंह विनयपूर्वक बोला—''मैं जन्मजात डकैत नहीं हूं। जब अंग्रेजों ने हमें दबाना शुरू किया तब मुझे अपने रास्ते से विचलित होना पड़ा और हम गिरोह बनाकर डकैती डालने

लगे। इसके पहले हम लड़ाइयों में हिस्सा ले रहे थे। लेकिन मैं गंगा मइया की सौगंध खाकर कहता हूं—मैंने कभी मां-बहनों और गरीबों को नहीं सताया।''

''बस करो सागर सिंह।'' रानी ने तर्जनी उंगली उठाकर कहा—''तुमने मेरी प्रजा पर अत्याचार करके अपनी मौत को दावत दी है। मैं तुम्हें छोड़ूंगी नहीं, तुम्हें जिंदा दफन किया जाएगा।''

रानी का उग्र रूप देखकर सागर सिंह को ऐसा लगा जैसे वह मां दुर्गा का अवतार हों।

''रानी साहिबा! मुझे फांसी दे दो। पर जिंदा दफन न कराएं।'' सागर सिंह गिड़गिड़ाते हुए बोला।

''यदि तुम्हें माफ कर दिया जाए तो।'' रानी ने सोच-विचार करते हुए कहा।

''तो मैं कभी झूठ नहीं बोलूंगा रानी साहिबा। डाके डालना बंद कर दूंगा, लेकिन रोजी-रोटी चलाने के लिए मुझे कुछ काम मिलना चाहिए।''

''तुम मुझसे डाका न डालने के बदले क्या चाहोगे सागर सिंह।'' रानी ने पूछा।

''आपकी सेवा करना रानी साहिबा।''

''अकेले या अपने सभी साथियों के साथ।''

''आप आज्ञा करें रानी साहिबा। मैं अपने सभी साथियों को लेकर आपकी सेवा में उपस्थित हो जाऊंगा।''

''लेकिन तुम्हारे साथी यहां आकर क्या करेंगे?''

''आपकी आज्ञा हुई तो वे आपकी सेना में नौकरी करेंगे।''

''सच में?''

''हां रानी साहिबा। कसम गंगा मइया की, जो मैं झूठ बोलूं। आप आदेश करें।''

''तो जाओ! मैंने तुम्हें माफ किया। तुम अपने साथियों को लेकर झांसी आ जाओ और हमारी सेना में भर्ती हो जाओ। मुझे खुशी होगी।''

''यदि मैंने अपने साथियों को आपके सामने पेश नहीं किया तो मेरा नाम कुंवर सागर सिंह नहीं।''

''यदि तुम कुंवर के योग्य काम करोगे तो तुम्हें कुंवर कहकर संबोधित किया जाएगा, लेकिन तुमसे पहले खुदाबख्श को कुंवर की पदवी दी जाएगी। उसी ने ही तुम्हारी हवेली पर आक्रमण किया था और तुमने उसे अपनी तलवार से घायल कर दिया था।''

''रानी साहिबा! मैं उनसे माफी मांगना चाहता हूं। कृपया आप उन्हें बुलवाने का कष्ट करें।''

रानी ने खुदाबख्श को बुलवाया। उसने आकर रानी क चरणों में शीश झुकाया।

''कैसे हो—खुदाबख्श।'' रानी ने पूछा।

''आपकी कृपा है रानी साहिबा। जब तक आपका हाथ मेरे सिर पर है, तब तक मेरा कुछ नहीं बिगड़ सकता।''

''ये सागर सिंह हैं खुदाबख्श! तुमने सुना होगा कि मैंने इन्हें गिरफ्तार कर लिया है।''

''जी रानी साहिबा। यह सुनकर मेरे शरीर का सारा दर्द दूर हो गया।''

''आज मैं तुम्हें और सागर सिंह को कुंवर की उपाधि प्रदान कर रही हूं। अब जो लोग वीरता का कार्य करेंगे, उन्हें कुंवर की उपाधि से सम्मानित किया जाएगा। राज्य में वे लोग कुंवर मंडली के अधीन जाने जाएंगे।''

तभी सागर सिंह, खुदाबख्श के पैरों पर गिर पड़ा—''मुझे माफ कर दो भाई! मुझे माफ कर दो।''

''रानी साहिबा की सेवा में आकर तुम्हारे सारे अपराध अब माफ कर दिए गए हैं।'' खुदाबख्श ने कहा।

''अब मैं रानी साहिबा की कृपा से मनुष्य कहलाने योग्य हो जाऊंगा।'' सागर सिंह ने प्रसन्न मुद्रा में कहा।

रानी का आदेश पाकर खुदाबख्श विश्राम करने गया और सागर सिंह अपने साथियों को झांसी लाने के लिए निकल पड़ा। उसके बाद अली बहादुर रानी को बधाई देने आया। वह कुछ देर बाद रानी को अपनी शिष्टता दिखाकर चला गया।

नत्थे खां का झांसी पर आक्रमण

नवाब का बधाई देने आना एक तरह का दिखावा था। उसने वापस लौटकर सारी बातें पीर अली को बताईं।

''रानी ने सागर सिंह और उसके गिरोह के लोगों को अपनी सेना में भर्ती करके हमें अंग्रेजी सरकार के खिलाफ तैयारी करने का प्रमाण दिया है। किसी तरह से इस खबर को जबलपुर कमिश्नर साहब के पास पहुंचाया जाए।'' नवाब अली बहादुर ने पीर अली से कहा।

''अवश्य नवाब साहब। रानी के लोग अंग्रेजी सरकार के साथ धोखा करना चाहते हैं। मैं जाकर कमिश्नर से आज सारी बातें बताता हूं।'' पीर अली ने कहा।

''तुम जबलपुर मत जाओ पीर अली! टीकमगढ़ के दीवान नत्थे खां के हाथ तुम खबर भिजवा दो। वे मुझे जानते हैं और अंग्रेजी सरकार का साथ भी दे रहे हैं।''

इतना कहने के बाद नवाब ने अपना एक दूत टीकमगढ़ भेजा। दूत ने नत्थे खां को सारी बातें बताईं। नत्थे खां ने कमिश्नर को खबर भिजवा दी। कमिश्नर झांसी पर आक्रमण करने की तैयारी करने लगा। एक जमाना था, जब झांसी, ओरछा राज्य का एक अंग था। बाद में ओरछा राज्य टीकमगढ़ कहलाने लगा। झांसी को पुनः प्राप्त करने के

लिए नत्थे खां ने अपनी फौज को तैयार किया। वह फौज को लेकर टीकमगढ़ से ओरछा आया। ओरछा झांसी से आठ मील दूर है। नत्थे खां को उम्मीद थी कि अंग्रेज उसका समर्थन करेंगे। इसलिए वह झांसी पर अपना अधिकार जमाना चाहता था। उसने रानी को अपनी भावनाओं से अवगत कराया। पर रानी ने धैर्यता का परिचय देते हुए सहेलियों से कहा—"किसी को चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। नत्थे खां से मुकाबला करने के लिए सेना का संचालन मैं करूंगी।"

झांसी राज्य का एक वयोवृद्ध कर्मचारी था, जिसका नाम नाना भोपटकर था। भोपटकर बड़ा दूरदर्शी था। उसने रानी से विनयपूर्वक कहा—"रानी साहिबा! आप साक्षात विजय की देवी लगती हैं। युद्ध के परिणाम में कोई शक नहीं है। जीत आपकी ही होगी। मगर मैं आपको यह सुझाव देना चाहता हूं कि अंग्रेजों ने अपना जो झंडा (यूनियन जैक) यहां छोड़ रखा है, उसे किले पर लगा दिया जाए।"

"इस तरह की राजनीति कब तक चलेगी, भोपटकर जी! हमें एक न एक दिन यहां स्वराज्य स्थापित करना ही है।" रानी ने कहा।

"रानी साहिबा! आज की राजनीति यह कहती है कि अपने उद्देश्यों को ढंककर रखा जाए।"

"कहने का मतलब हाथी के दांत खाने के और, दिखाने के कुछ और।"

इतना कहने के बाद रानी के चेहरे पर मुस्कराहट दौड़ गई। फिर उन्होंने आदेश दिया—"भोपटकर जी के सुझावों का पालन किया जाए। उन्होंने नत्थे खां को यह संदेश भिजवाया कि मैं झांसी की व्यवस्था अंग्रेजी हुकूमत की ओर से कर रही हूं। इसलिए नत्थे खां का झांसी पर आक्रमण करना उचित नहीं है। उसने यदि झांसी पर आक्रमण किया तो उसे उसका माकूल जवाब दिया जाएगा। जिससे कि झांसी की रक्षा हो सके।"

नत्थे खां नहीं माना। उसने अनन्त चतुर्दशी के दिन झांसी पर आक्रमण कर दिया। उस दिन रानी पूजा में व्यस्त थीं। नत्थे खां के सैनिकों ने एक गोला दागा, जो झांसी नगर के एक मकान पर गिरा। उसी वक्त रानी ने अपनी पूजा बंद की। वे सहेलियों को लेकर अपने घोड़े पर बैठीं और ओरछा फाटक की ओर निकल पड़ीं।

''दुश्मन इसी फाटक की ओर हैं। इसलिए उन पर लगातार गोलों की वर्षा की जाए।'' रानी ने गुलाम गौस खां को आदेश देते हुए कहा।

गौस खां ने रानी के आदेश का पालन किया। उसने ग्यारह छोटी-छोटी तोपों से गोलाबारी शुरू कर दी। फिर रानी ओरछा फाटक से आगे बढ़ीं। उसके उत्तर में सागर खिड़की के नाम का एक छोटा दरवाजा था। यहां रानी का तोपची तैनात था। रानी ने उसे एक ऐसी हिदायत दी कि उसने नत्थे खां के सैनिकों को पूरी तरह से हताहत कर दिया। इससे नत्थे खां को अपनी औकात का पता चल गया। वह दुम दबाकर मैदान से भाग खड़ा हुआ। उसकी बची-खुची सेना बिखरकर रह गई। मगर रानी की सेना ने उसके सैनिकों को खदेड़कर ही दम लिया।

उधर, नत्थे खां ने नवाब अली बहादुर की हवेली में पहुंचकर शरण ली। मजबूर होकर नवाब को उसे अपनी हवेली में शरण देनी पड़ी। जब रानी के सैनिकों को यह खबर मिली तो उन्होंने नवाब की हवेली पर धावा बोल दिया, मगर नत्थे खां वहां से भागने में सफल रहा। पर नवाब के सिर पर बहुत बड़ी आफत आ गई। वह अपनी हवेली से बहुमूल्य सामान लेकर पीर अली के साथ भाग खड़ा हुआ। उसके साथ बच्चे और नौकर भी थे। पीर अली रानी की सेना के पास जा पहुंचा। सैनिक उसे जब मारने के लिए दौड़े, तब वह चिल्लाते हुए बोला—''मुझे मत मारो। मुझे मत मारो। मैं रानी साहिबा का शुभचिंतक और तुम्हारा दोस्त हूं। मैंने नवाब के यहां पेट भरने के लिए नौकरी की थी, लेकिन आज मैं तुम लोगों की सेवा करने आया हूं। आग लगा दो

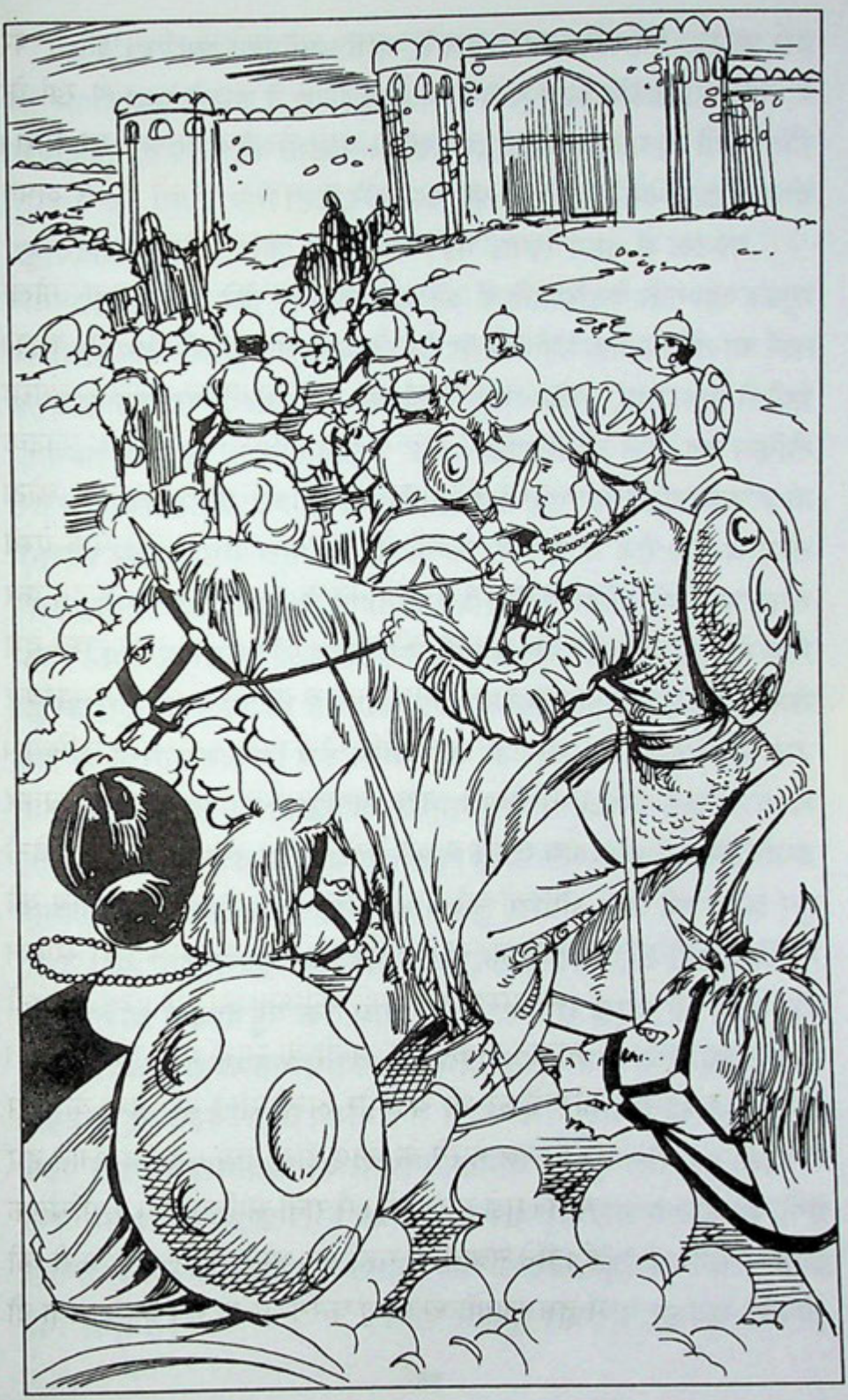

इस फाटक में। अंदर क्या माल है, सब पता चल जाएगा।''

''तेरा नवाब कहां गया?'' सागर सिंह ने उससे पूछा।

''वो तो फाटक के अंदर बंद हैं। फाटक को आग लगाओ, फिर वो पकड़ में आ जाएंगे।'' पीर अली ने कहा।

फाटक में आग लगाई गई। पीर अली कुछ देर बाद अंदर घुस गया। वह रानी के सिपाहियों को माल उठाकर देने लगा। वहां नवाब नहीं था तो मिलता कैसे? माल देने के बाद पीर अली सिपाहियों का हितैषी बन गया, लेकिन मोतीबाई को पीर अली पर पूरा शक था लेकिन वह कुछ बोली नहीं।

उस जमाने का एक सर्वश्रेष्ठ सेनानायक था, जो अंग्रेज था। उसे लोग जनरल रोज के नाम से जानते थे। वह उस समय मध्य प्रदेश में रहता था। उसने अपनी सेना को दो भागों में विभाजित किया। उसने सेना के एक भाग को महू छावनी भेज दिया और दूसरे भाग को लेकर सागर की ओर आया। यहां से झांसी लगभग सौ मील की दूरी पर है। उस समय नर्मदा के उत्तर का अधिकांश क्षेत्र विप्लवकारियों के हाथ में था। जनरल रोज झांसी पर धावा बोलना चाहता था, मगर विप्लवकारी उसके रास्ते में बाधा बन रहे थे। इसलिए वह विप्लवकारियों को हराते हुए झांसी की ओर अग्रसर हुआ। रानी को सारी खबर समय-समय पर मिल रही थी, और वे लड़ाई की तैयारियां करने लगी थीं। उधर, पीर अली भी प्रमुख समाचारों को नवाब तक पहुंचा रहा था। जबकि नवाब अंग्रेजों के पास अपना उचित सुझाव भेजता रहता था। 12 मार्च, सन् 1858 को जनरल रोज अपनी सेना लेकर ताल-बेहट पहुंचा। यहां से झांसी 32 मील दूर है। जनरल ने झांसी पर आक्रमण करने से पहले रानी के पास एक पत्र भेजा। पत्र में उसने लिखा था—''आप अपने दीवान, सगे-संबंधी और सैनिकों को लेकर झांसी छोड़ दें, अन्यथा आपको भयंकर परिणाम भुगतने पड़ेंगे।''

रानी हर स्थिति से निपटने के लिए तैयार थीं। उन्होंने जनरल रोज की बातों का जवाब लिख भिजवाया—''तुम्हारी गीदड़ भभकी में आकर मैं झांसी नहीं छोड़ सकती। तुम झांसी के सभी पंचों और मुखियों को एकत्र करो। यदि वे कह देंगे तो मैं झांसी से खाली हाथ चली जाऊंगी।''

जनरल रोज को रानी का जवाब मिला। वह रानी की जासूस मोतीबाई का नाम सुन चुका था और उसे मन ही मन चाहने लगा था। यह जानकर रानी को बड़ा आश्चर्य हुआ। रानी ने इसका कारण मोतीबाई से पूछा तो मोतीबाई ने जवाब दिया—

''रानी साहिबा! यदि मैं उस कमबख्त को पा गई तो उसे तोप के मुंह पर रखकर उड़ा दूंगी।''

तभी पीर अली का संदेशवाहक रानी के पास संदेश लेकर आया—

''रानी साहिबा! पीर अली साहब अंग्रेजों की छावनी में जाकर वहां का भेद लेना चाहते हैं। इसके लिए उन्होंने आपकी इजाजत मांगी है।''

''इजाजत है।'' किसी के आक्षेप न करने पर रानी ने उसे इजाजत दे दी। रानी अब उस पर विश्वास करने लगी थीं, लेकिन पीर अली पर मोतीबाई को अब भी शक हो रहा था।

''पीर अली वहां का भेद लेकर कब तक लौटेगा?'' रानी ने मोतीबाई से पूछा।

''यदि उसे रास्ता साफ मिलेगा, तो वह कल तक लौट आएगा।'' मोतीबाई ने उत्तर दिया।

''वह बड़ा चालाक मालूम पड़ता है।''

''वह बड़ा दुष्ट भी है रानी साहिबा। मुझे उस पर कभी-कभी शक होता है। पर आजकल उसका काम देखकर मुझे उस पर विश्वास होने लगा है।''

''मैंने सुना है कि अंग्रेजी सेना में हिन्दुस्तानी सैनिक भी हैं।''

''जी हां रानी साहिबा, लेकिन उन सैनिकों की संख्या का अनुमान अभी नहीं लग पाया है। उनकी सही संख्या पीर अली के आने पर ही पता चलेगी।''

उधर, पीर अली अंग्रेजों की छावनी के पास पहुंचा। उसने वहां जनरल रोज से मिलने की अपनी अर्जी भेजी। जनरल ने प्रसन्न होकर उसे अपने पास बुलाया।

पीर अली ने उसे झांसी की एक-एक खबर बताई। उसने यह भी बताया—''झांसी की रानी ने स्त्रियों की सेना तैयार की है। हिन्दुस्तान की स्त्रियां सिपाहियों का चोला पहनकर तैयार खड़ी हैं। उन्हें घुड़सवारी और अस्त्र-शस्त्र चलाने का पूरा प्रशिक्षण प्राप्त है।''

यह खबर पाकर जनरल दंग रह गया। उसने पीर अली से पूछा—''क्या झांसी की रानी ने ही अंग्रेजी स्त्री और बच्चों को मौत के घाट उतारा था?''

''नहीं जनरल साहब।'' पीर अली ने सिर हिलाते हुए कहा।

''कुछ भी हो। अब झांसी को बख्शा नहीं जाएगा।'' जनरल ने पीर अली से कहा।

पीर अली किस तरह से उसकी मदद करेगा, वह उसने निश्चित कर दिया। उसके बाद पीर अली झांसी लौट आया। फिर जनरल ने अपनी सेना लेकर बेतवा नदी को पार किया और वह झांसी की ओर बढ़ने लगा। तभी उसके प्रधान सेनापति ने आदेश भेजा—''चरखारी के राजा को तात्या टोपे ने घेर रखा है। राजा की सहायता के लिए पहले चरखारी पर आक्रमण किया जाए।''

लेकिन जनरल ने उसकी बात नहीं मानी। वह पहले झांसी से निपटना चाहता था।

उधर, तात्या ने चरखारी से चौबीस तोपें छीन लीं और तीन लाख

रुपये भी झपट लिए। फिर वहां से वह कालपी चला गया।

पीर अली ने जो खबर रानी के पास भिजवाई, उसे बड़ा महत्व दिया गया, जबकि उसकी खबर में कोई अनोखापन नहीं था। उसने खबर देकर रानी के मन में अपना विश्वास और मजबूत कर लिया। बाद में उसने बड़ी चालाकी से अपने नवाब को भी सारी स्थिति से अवगत कराया।

कुछ दिनों बाद राहतगढ़ से भागे हुए लगभग पांच सौ पठान रानी की शरण में आए। उन्होंने रानी की अधीनता स्वीकार की। रानी ने उन्हें हर प्रकार की सुविधाएं प्रदान कीं। वे झांसी राज्य के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाने को तैयार हो गए।

अब जनरल अपनी सेना लेकर झांसी के पूर्व में कामासिन देवी के मन्दिर तक आ गया था। उसके सभी सैनिक मन्दिर की पहाड़ी के पीछे छिपे थे। कुछ देर बाद उन्होंने वहां तंबू तान लिए। रानी ने उनके तंबू का दृश्य दूरबीन के द्वारा अपनी छत पर से देखा। मोतीबाई ने उन्हें सुझाव दिया कि घोड़े पर सवार होकर दुश्मनों पर हमला किया जाए।

''मोतीबाई! यह उचित नहीं होगा, क्योंकि दुश्मनों के चारों ओर तोपें बिछी होंगी। लड़ाई किले के भीतर से लड़ना उचित होगा। तात्या टोपे के आने के बाद दुश्मनों पर दोहरी मार पड़ेगी। मैं उन्हें अभी संदेशा भिजवाती हूं।'' रानी ने मोतीबाई को समझाते हुए कहा।

रानी ने जूही द्वारा तात्या के पास संदेश भेजा। उसके साथ काशीबाई भी गई थी।

जनरल झांसी के चारों ओर नाकेबंदी कर चुका था। उसका आदेश पाकर सैनिकों ने गोलाबारी शुरू कर दी। रानी के सिपाही भी गोलों का जवाब गोलों से देने लगे। दिन में पुरुष तोपें चलाते थे और रात में स्त्रियां। कुछ दिनों बाद उन्होंने अंग्रेजी मोर्चे को ठंडा कर दिया। फिर रानी ने दिन में स्त्रियों को तोप चलाने पर लगा दिया। रात में पुरुष

गोलाबारी करते थे। अंग्रेजी तोपों ने झांसी के कुछ घरों को नुकसान पहुंचाया। ऐसे में रानी की ओर से भाऊ बख्शी ने अपनी सूझ-बूझ का परिचय दिया। उसने अंग्रेजों के तोपची को अपनी तोपों से उड़ाकर दुश्मनों की गोलाबारी को कम कर दिया। फिर वह तोप चलाने का दायित्व अपनी पत्नी को सौंपकर भोजन करने गया।

उसके जाने के कुछ देर बाद पीर अली अंग्रेजी खेमे की ओर बढ़ा। रानी के सैनिकों ने उसे रोका भी पर वह जनरल के पास पहुंचने में सफल रहा।

''किले से गोलाबारी करने वाला प्रधान नायक कौन है ?'' जनरल ने पीर अली से पूछा।

''भाऊ बख्शी और गुलाम गौस खां।'' पीर अली ने कहा।

''लेकिन उनका प्रधान सेनापति कौन है पीर अली ?''

''स्वयं झांसी की रानी।''

''उनके पास बारूद कहां से आता है ?''

''बारूद का उनका अपना कारखाना है।''

''पीर अली तुम एक काम करो, हमारे सैनिकों को तुम अपनी सागर खिड़की से झांसी नगर में घुसने का मौका दो।''

''यह नहीं हो सकता जनरल साहब।''

''क्यों ?''

''क्योंकि सागर की खिड़की के पीछे बड़ी-बड़ी तोपें लगी हैं।''

''तुम मुझे फाटक के किसी द्वार पालक से मिला दो। मैं तुम्हें ढेर सारा इनाम दूंगा।''

''ठीक है, मैं कोशिश करता हूं।''

''एक बात यह बताओ कि झांसी शहर पर हमारी तोप का गोला कहां से अच्छा पड़ेगा।''

''किले के पश्चिम में जार पहाड़ी से।''

''परकोटे के दक्षिण में आप किसी फाटक को हमारे लिए खुलवा दीजिए। बड़ी कृपा होगी।'' जनरल ने कहा।

''वादा नहीं कर सकता। फिर भी आप धैर्य रखें। मैं प्रयास करूंगा।''

पीर अली से जितना हो सका उतना उसने जनरल की सहायता की। जनरल ने एक रात जार की पहाड़ियों पर अपनी तोपें लगवा दीं। फिर शुरू हुआ झांसी नगर को विध्वंस करने का सिलसिला। वहां तोपों के गिरने से झांसी के असंख्य लोग बे-मौत मारे गए। नगर में आग लगने से वहां की गलियां सूनी हो गईं। लोगों की जान-माल की हानि से रानी बड़ी दुखी हुईं।

अचानक उनके चेहरे पर उत्साह की एक नई किरण दिखाई पड़ी। वे शीघ्र ही अपने घोड़े पर सवार हुईं और नगरवासियों के रहने-खाने का इंतजाम करने लगीं। लौटते समय उन्होंने गुलाम गौस खां से भेंट की—''दुश्मनों की तोपों से झांसी नगर का एक चौथाई हिस्सा तबाह हो गया है। अब दुश्मन पश्चिमी दिशा से अधिक गोलाबारी कर रहे हैं।''

यह जानकर गुलाम गौस खां ने अपनी तोपों का मुंह पश्चिमी क्षेत्र में कर दिया। उसने देखते ही देखते अंग्रेजी तोपों को फाड़ कर रख दिया। उसने वहां इतने गोले बरसाए कि अंग्रेजों को मुंह की खानी पड़ी।

इस कामयाबी के चलते रानी ने गुलाम गौस खां को सोने का चूड़ा देकर पुरस्कृत किया।

जरनल को जब यह पता चला कि पश्चिमी क्षेत्र में हमारा मोर्चा नष्ट हो गया है तो उसने अपने नायक स्टुअर्ट को वहां मोर्चे का पुनर्निर्माण करने का आदेश दिया। उसने दूरबीन से रानी के सैनिकों को किले से गोलाबारी करते देखा। स्त्रियों की बहादुरी देखकर उसे

बड़ा आश्चर्य हुआ। वह उनका मुकाबला करने के लिए तरकीब सोचने लगा।

जनरल ने निश्चित किया कि झांसी के दक्षिण भाग पर भयंकर गोलाबारी की जाए। इसके लिए उसने अपने सैनिकों को आदेश भी दिया। उसके सैनिक दक्षिण भाग पर गोलाबारी करने लगे। जवाब में रानी के सैनिकों ने भी जमकर गोलाबारी की। भाऊ बख्शी की पत्नी ने बड़ी हिम्मत दिखाई। वह तोप पर तोप दागती रही। लेकिन दुश्मनों का एक गोला उसके कंधे पर आकर लगा और वह अचेत होकर गिर पड़ी।

उसकी मृत्यु का समाचार भाऊ बख्शी को मिला। बख्शी ने अपनी राजभक्ति का परिचय देते हुए कहा—''पत्नी से बढ़कर झांसी का राज्य है। मैं दुश्मनों को जब तक सबक नहीं सिखा देता, तब तक मेरी पत्नी का अंतिम संस्कार नहीं होगा।''

इतना कहने के बाद उसने अपनी जान की परवाह न करते हुए दुश्मनों पर गोले बरसाने शुरू कर दिए। उसने अपने आपको मुश्किल में डालते हुए बड़ी तेजी से गोले बरसाए। इसका परिणाम यह निकला कि दुश्मनों का पूर्वी मोर्चा भी नेस्तनाबूद हो गया।

रानी ने आकर उसकी पत्नी की मृत्यु पर शोक जताया। वे उसके शव को अपनी गोद में लेकर रोने लगीं, जबकि नगर में अंग्रेजों के गोले धड़ाधड़ बरस रहे थे। गुलाम गौस खां ने रानी को समझाते हुए कहा—''रानी साहिबा! अभी न जाने कितने सरदारों को अपनी कुरबानी देनी पड़ेगी। आप एक तोपची की मृत्यु से इतना निराश मत होइए। आपने हमें समझाया है कि स्वराज्य की लड़ाई में कुरबान होना स्वाभाविक है, इसलिए आप उठिए और अपने सैनिकों का संचालन कीजिए।''

शाम को बख्शी की पत्नी का अंतिम संस्कार किया गया। उस समय दोनों ओर से लड़ाई में ढील देखने को मिली। लेकिन पीर अली

ने रानी के साथ विश्वासघात करते हुए जनरल की सहायता करने की कसम खाई। उसकी जनरल से यह बातचीत हुई—''झांसी पर विजय प्राप्त करने के बाद अंग्रेजी हुकूमत तुम्हें जागीर के रूप में दो-तीन गांव प्रदान कर देगी।'' इस पर पीर अली सहमत हो गया था।

झांसी के दक्षिणी और पश्चिमी मोर्चे पर घमासान युद्ध चल रहा था। पश्चिम क्षेत्र से अंग्रेजों की गोलाबारी में किले की पश्चिमी दीवार का एक हिस्सा ढह गया। तभी दुश्मनों के एक दल ने किले में प्रवेश करना चाहा मगर खंडेराव और सागर सिंह ने दुश्मनों को रोकने का प्रयास किया।

''देखते क्या हो ? नीचे कूद पड़ो।'' सागर सिंह ने अपने साथियों का हौसला बढ़ाते हुए कहा—''दुश्मन किले में घुसने वाले हैं। यदि वे किले में घुस गए तो हम सबके मुंह पर कालिख लग जाएगी। इसलिए दुश्मनों को मार गिराओ। वे किले में घुसने न पाएं।''

उसके कहने में देर नहीं हुई कि सैकड़ों सैनिक रस्से की सीढ़ी लगाकर नीचे कूद पड़े और अंग्रेजी दस्ते पर गोलियां बरसाने लगे। उधर से भी गोलियां चलीं मगर रानी के सैनिकों ने दुश्मनों को तितर-बितर कर दिया। फिर भी अंग्रेजों ने एकत्र होने का प्रयास किया।

यह देखकर सागर सिंह ने अपनी दोधारी तलवार से अंग्रेजों के उस दस्ते को वहीं काटकर फेंक दिया, लेकिन वह अपने आपको दुश्मनों के हमले से नहीं बचा सका। दुश्मनों ने उसे और खंडेराव को हमेशा के लिए मातृभूमि की गोद में सुला दिया।

सागर सिंह के शौर्य का समाचार पाकर रानी खुशी से गद्‌गद हो उठीं।

उन्होंने हर्षित होते हुए कहा—''जिस देश में सागर सिंह जैसे लोगों ने जन्म लिया है, वह देश ज्यादा दिनों तक स्वराज्य से वंचित नहीं रह सकता।''

रातोंरात किले की टूटी दीवार को पुनः निर्मित किया गया। अगले दिन अंग्रेजों ने जब दूरबीन से किले की उस दीवार को देखा तो वह जुड़ी दिखाई पड़ी। रानी के किले वाले महल पर गणेशजी का एक मंदिर था। दुश्मनों ने गोलाबारी से इस मंदिर को नष्ट कर दिया। मगर गणेशजी की मूर्ति सुरक्षित बच गई। तभी से झांसी की सेना में एक नया जोश देखने को मिला। उन्होंने जोश में आकर दुश्मनों पर हमला तेज कर दिया, लेकिन रानी के उस कारखाने में आग लग गई, जिसमें बारूद बनता था।

आग लगने से कारखाने में काम करने वाले कई लोगों के परखच्चे उड़ गए। इस घटना से चारों ओर हाहाकार मच गया। मगर रानी ने शीघ्र ही स्थिति पर काबू पाते हुए कारखाने में दूसरे लोगों को काम पर लगा दिया। वे वहां रानी के आदेश पर काम करने लगे।

उधर, तात्या टोपे चरखारी पर अपनी जीत दर्ज कर चुका था। इस खुशी में उसके सिपाहियों ने समारोह का आयोजन किया। उसके बाद तात्या ने कालपी आकर अपने शस्त्रों के भंडार गृह का निरीक्षण किया। यहां तोपों की ढलाई का कार्य चल रहा था और बंदूकें भी बनाई जा रही थीं। कुछ देर बाद वहां जूही का आगमन हुआ। जूही ने तात्या को झांसी की स्थिति से अवगत कराया। समाचार पाकर तात्या रानी की मदद करने के लिए अपनी सेना लेकर निकल पड़ा, लेकिन रास्ते में जनरल से उसकी मुठभेड़ हो गई और वह आगे न बढ़ सका। उसे विवश होकर वापस कालपी लौटना पड़ा। उसके साथ जूही भी वापस कालपी लौट आई।

तात्या के लौट जाने का समाचार रानी को मिला, पर वे निराश नहीं हुईं। उन्होंने अपने सिपाहियों का आत्मबल बढ़ाने के लिए पूड़ियां तैयार करवाईं। सभी सिपाहियों ने प्रेमपूर्वक रानी की पूड़ी को ग्रहण किया। उन्होंने पूड़ियों का एक छोटा टुकड़ा अपने साफे में बांध लिया

और उन्मत्त होकर दुश्मनों से लड़ने के लिए निकल पड़े। अब लड़ाई पहले से अधिक भयंकर रूप इख्तियार करने लगी।

दुल्हाजू नाम का एक ऐसा व्यक्ति था, जो बड़ा ही देशद्रोही था। वह अंग्रेजों को लेकर किले में घुसना चाहता था। मौका पाने पर उसने किले के फाटकों पर लगे तालों को तोड़ दिया। तभी सुंदर तलवार लेकर उसके सामने आ खड़ी हुई—"देशद्रोही कहीं के! तू चाहे कितनी भी अंग्रेजों की मदद कर दे, पर वे तुझे कुछ देने वाले नहीं हैं।"

इतना कहकर उसने अपनी तलवार से दूल्हाजू पर वार किया। लेकिन दुल्हाजू ने लोहे की छड़ पर उस वार को ले लिया। इससे उसकी तलवार के दो टुकड़े हो गए। तभी गोरों ने ओरछा फाटक को धक्का देकर खोल दिया।

इतने में सुंदर चिल्लाई—'हर हर महादेव।' उसी समय दुश्मनों की एक गोली उसके सिर पर आकर लगी और वह धराशायी हो गई।

एक अंग्रेज अधिकारी ने दूल्हाजू से पूछा—"यही है झांसी की रानी?"

"जी नहीं। यह उनकी नौकरानी है।" दूल्हाजू बोला।

सुंदर के बाद खुदाबख्श भी दुश्मनों के हाथों मारा गया। फिर अंग्रेज ओरछा फाटक से नगर में घुसने लगे। यह समाचार पाकर रानी ने अपने सरदारों के साथ एक सभा की। रानी ने सभा में अपने सरदारों को आदेश दिया—"आज झांसी पर मुसीबत के बादल छा गए हैं। तुम सब बाहर निकलो और झांसी के लिए दुश्मनों का सामना करो। अंग्रेजों को यहां से बाहर करो जिससे कि झांसी राज्य को सुरक्षा प्रदान हो। जाओ देर मत करो।"

सभी ने रानी की आज्ञा को शिरोधार्य किया। उनका नेतृत्व करने का फैसला रानी ने स्वयं किया। उनकी सेना में कुल पांच सौ पठान

और एक हजार बुंदेलखंडी सैनिक थे। इन सैनिकों ने अंग्रेजों से जमकर युद्ध किया।

रानी समय-समय पर अपने सैनिकों का हौसला बढ़ाती रहती थीं। आज वे चिल्ला-चिल्लाकर कह रही थीं—"वीर सैनिको! आज दिखा दो अपनी तलवार की ताकत जिससे अंग्रेजों को यह पता चले कि हिंदुस्तानी सिपाही के आगे टिक पाना मुश्किल है।"

उसके बाद युद्ध ने और विकट रूप धारण कर लिया। बंदूकों की बजाय तलवारें ज्यादा चल रही थीं। हिंदुस्तानी सिपाहियों की तलवारों ने कई अंग्रेजों को मार गिराया, लेकिन आड़ से आने वाली गोलियों से झांसी के कई सिपाही घायल हो गए। तभी अचानक नाना भोपटकर भागते हुए रानी के पास आए।

"रानी साहिबा! अंग्रेज मकान की आड़ में खड़े होकर गोलियां चला रहे हैं।" भोपटकर ने हांफते हुए कहा।

यह सुनकर रानी ने अपने सैनिकों को लेकर उत्तरी फाटक से किले के अंदर प्रवेश किया। फिर अंदर से फाटक को बंद कर लिया गया। नगर में अंग्रेज बड़ी क्रूरता से लोगों का वध कर रहे थे। अंग्रेजों ने रानी के महल में भी आग लगा दी। महल के साथ-साथ रानी का पुस्तकालय भी जलने लगा। यह दृश्य देखकर रानी रो पड़ीं।

उसी समय उन्हें समाचार मिला कि दुश्मनों ने गुलाम गौस खां का वध कर दिया है। यह सुनते ही रानी शेरनी की तरह उछल पड़ीं। उन्होंने गौस खां की जगह पर मोर्चा संभालने के लिए भाऊ बख्शी को भेज दिया।

उसी समय दुश्मनों का मुकाबला करते समय मोतीबाई बुरी तरह से घायल हो गई। एक सिपाही उसे घायलावस्था में रानी के पास ले आया। मोतीबाई का जख्म बहुत गहरा था। उसने रानी की गोद में दम तोड़ दिया।

रानी जब वीरगति को प्राप्त हुई

एक दिन शाम को रानी ने झांसी के मुख्य लोगों की बैठक बुलाई। बैठक में उन्होंने सभी को संबोधित करते हुए कहा—''अब तक हमारे कई सूरमा लड़ाई में मारे जा चुके हैं। अंग्रेजों ने हमारे किले को घेर रखा है। वे झांसी के कई स्थानों पर आग भी लगा चुके हैं। यदि दुश्मन आप लोगों तक पहुंच गए तो वे आपकी बड़ी दुर्गति करेंगे। मैं उनकी पकड़ में आकर अपने पूर्वजों के नाम का अपमान नहीं कराना चाहती। इसलिए मैंने यह फैसला लिया है कि मैं बारूद के भंडार में जाकर अपने आपको समाप्त कर लूंगी।''

''रानी साहिबा! मैं भी अपने आपको आपके साथ समाप्त कर लूंगा।'' भाऊ बख्शी ने कांपते हुए कहा।

''यह उचित नहीं है रानी साहिबा।'' नाना भोपटकर निराश होते हुए बोला—''आप अपने जीवन में भगवान कृष्ण की गीता का अनुसरण करती आई हैं। फिर आज आप आत्मघात करने की क्यों सोच रही हैं। क्या आप स्वराज्य की स्थापना कर चुकी हैं। यदि नहीं, तो आपको स्वराज्य स्थापित करके अपने प्रण को पूरा करना है।''

यह सुनकर रानी के दिमाग में वह दृश्य नाचने लगा, जब कृष्ण भगवान ने अर्जुन को उपदेश दिया था। कुछ देर बाद रानी को एक नई अनुभूति महसूस हुई। तभी दामोदर राव रानी की गोद में आकर बैठ गया।

''मुझे माफ कर दो भोपटकर जी।'' रानी ने भोपटकर का पैर स्पर्श करते हुए कहा—''मैं लड़ूंगी। यदि मुझे सभी अंग्रेजों का सामना करना पड़ेगा तो भी मैं मैदान से पीछे नहीं हटूंगी। यह मेरा प्रण है।''

सभी लोगों ने रानी का समर्थन किया। फिर योजना बनाई गई उसके बाद रानी अपने सिपाहियों को लेकर मैदान में कूद पड़ीं। उन्होंने अपनी पीठ पर दामोदर राव को चादर से कसकर बांध रखा

था। अंग्रेजों ने झांसी नगर में चारों ओर आग दहका रखी थी। रानी-झांसी के किले को नमन करके भांडेरी फाटक की ओर बढ़ती जा रही थीं। उनके सैनिक नंगी तलवारें लिए हुए अगल-बगल चल रहे थे।

रानी की टोली जब कोतवाली के पास पहुंची तो वहां युद्ध छिड़ गया, लेकिन वे अंग्रेजी सेना को चीरती हुई आगे निकल गईं। उनके सैनिकों ने दुश्मनों का मुकाबला किया। इस मुकाबले में दोनों ओर के सैनिक घायल हुए। रानी के जो सिपाही सही-सलामत बचे, वे उनके पीछे दौड़ पड़े। रास्ते में धू-धू करते जल रहे मकानों से उजाला दिखाई पड़ रहा था। रानी ने भांडेरी फाटक के करीब अपनी सेना को रोक लिया।

बख्शी ने जब इस फाटक को खोला तो युद्ध ने विकराल रूप धारण कर लिया। रानी उस फाटक से कुछ सैनिकों के साथ बाहर निकल गईं। बख्शी दुश्मनों से लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हुआ।

रानी जब पहूज नदी के किनारे पहुंचीं तो उन्होंने जलपान किया। इसी बीच उन्हें दुश्मनों से टकराना पड़ा। इसमें उनका घोड़ा घायल हो गया। पर रानी को वहां एक गांव में उसी जैसा उम्दा घोड़ा मिल गया। उस घोड़े पर सवार होकर रानी आधी रात को कालपी पहुंचीं।

कालपी में पेशवा की सेना को तैयार किया जाने लगा। रानी के हाथ में सेना की सिर्फ एक टुकड़ी ही आ सकी। इस टुकड़ी को रानी ने लड़ाई के अनुकूल बनाया। इस टुकड़ी के सभी सैनिक लाल वर्दी में थे, जिन्हें लाल कुर्ती कहकर संबोधित किया जाता था।

उधर, जनरल रोज ने भी अपने सैनिकों सहित कालपी की ओर प्रस्थान किया। उसने रास्ते में पेशवा की एक टुकड़ी को हराकर कालपी में प्रवेश किया। यहां लाल कुर्ती के सैनिकों ने जनरल की सेना से जमकर मुकाबला किया। मगर वे हार गए। अंग्रेजों की विजय हुई।

पेशवा के राव साहब की सेना रानी के साथ हो गई थी। रानी को अपनी निरीक्षण यात्रा के दौरान एक बाबा गंगादास का पता चला। वे विचरण करती हुईं बाबा की कुटी पर पहुंचीं। उस समय उन्हें बहुत प्यास लगी थी। बाबा ने पानी पिलाकर उनकी प्यास बुझाई, बाद में उन्हें पता चला कि ये तो झांसी की महारानी हैं। रानी ने उनसे सवाल किया—"इस देश को स्वराज्य कैसे प्राप्त होगा बाबा?"

"जैसे भी हो—स्वराज्य प्राप्त होगा जरूर?" बाबा बोले।

"लेकिन कैसे?"

"सेवा, तपस्या और बलिदान से।"

"हम झांसी में स्वराज्य कैसे स्थापित करेंगे?"

"जैसे एक नींव पर धीरे-धीरे मकान खड़ा हो जाता है, उसी प्रकार आपका स्वराज्य भी स्थापित हो जाएगा, लेकिन इसके लिए लगातार प्रयास और बलिदान आवश्यक है।"

"क्या हमारे जीवन में स्वराज्य की प्राप्ति हो जाएगी?"

"शुरू किए गए कार्य को आगे बढ़ाने वाली तुम हो। तुम्हारे बाद जो लोग आएंगे, वे इस कार्य को और आगे बढ़ाएंगे, लेकिन स्वराज्य प्राप्त होने में अभी समय लगेगा। जब राज्य को जनता का पूरा सहयोग मिल जाएगा और राजा भोग-विलास की भावना छोड़कर प्रजा की सेवा करेंगे, तब यह माना जाएगा कि स्वराज्य की नींव भर गई है। फिर इस नींव पर भवन का निर्माण होगा।"

बाबा की बात सुनकर रानी ने उन्हें प्रणाम किया और वहां से आगे बढ़ गईं। उन्हें अपने प्रवास पर यह पता चला कि जनरल अपनी सेना लेकर ग्वालियर को घेरने आ रहा है। यहां के अधिकांश सैनिकों ने राव साहब का समर्थन किया, लेकिन जनरल ने राजनीतिक चाल चलते हुए उन सैनिकों को अपने साथ कर लिया। इससे राव साहब कमजोर पड़ गए पर रानी का उत्साह कम नहीं हुआ।

मौका पाकर जनरल के सेना ब्रिगेडियर ने युद्ध का बिगुल बजा दिया। रानी ने उसका डटकर मुकाबला किया। दोनों के बीच घमासान युद्ध हुआ। अंग्रेजी सेना को पहली ही टक्कर में मात खानी पड़ी। जनरल को बड़ी हानि हुई।

इसलिए ब्रिगेडियर ने अपना पैंतरा बदला। उसके छुपे सैनिकों ने धोखे से लाल कुर्ती के सैनिकों पर वार किया। इससे लाल कुर्ती के अधिकांश सैनिक मारे गए। अब अंग्रेज फूल बाग नामक स्थान को अपने अधिकार में करना चाहते थे, पर उनकी यह मनोकामना रानी के रण कौशल ने पूरी नहीं होने दी।

अगले दिन सुबह रानी ने स्नान किया और गीता के अठारहवें अध्याय का पाठ भी किया। तभी उन्हें चिड़ियों की चहचहाहट सुनाई पड़ी। फिर उन्होंने लाल कुर्ती की मर्दानी पोशाक धारण की। अपने दोनों ओर उन्होंने तलवारें बांधीं। इतने में उनके प्रमुख सरदारों का आगमन हुआ।

''मुंदर! मेरे घोड़े को निकालो।'' रानी ने मुंदर से कहा।

''रानी साहिबा! आपका घोड़ा चल नहीं सकता। उसके पैर में चोट आई है।'' मुंदर बोली।

''फिर मेरे लिए कोई दूसरा मजबूत घोड़ा ले आओ।''

आदेश पाकर मुंदर ग्वालियर के महाराज सिंधिया के अस्तबल में गई। यहां से वह एक अच्छा घोड़ा चुनकर रानी के पास ले आई। रानी ने उस घोड़े को बड़ी बारीकी से पहचाना और कहा—''अब हर काम के लिए मैं इसी घोड़े का इस्तेमाल करूंगी।''

''रानी साहिबा! आप आज्ञा करें तो मैं आपके लिए जलपान की व्यवस्था करूं।'' मुंदर ने कहा।

''गर्मी का मौसम है। इसलिए तुम मुझे ठंडा-ठंडा शरबत पिला दो।'' रानी ने बड़ी नम्रता से कहा।

मुंदर ने रानी को ठंडा शरबत बनाकर पिलाया।

तभी दुश्मनों का बिगुल उन्हें सुनाई पड़ा।

उसके कुछ मिनट बाद गोले की आवाज और एक गोले की किले से टकराने की आवाज! ये आवाजें सुनकर रानी ने अपने आपको सावधान किया।

''आज दामोदर को तुम अपनी पीठ पर बांधो।'' रानी ने अपने सरदार रामचन्द्र से कहा—''यदि मैं लड़ाई में मृत्यु को प्राप्त हो जाऊं तो तुम दामोदर को दक्षिण पहुंचा देना। आज तुम्हें मेरी चिंता छोड़कर अपने प्राणों की रक्षा करनी है। एक बात का और ध्यान रखना, मेरे मरने के बाद अंग्रेज मेरे शव को छू न पाएं। जाओ रामचन्द्र, अपने घोड़े पर बैठो।''

रामचन्द्र चला गया। उसके जाने के बाद रानी जूही के सिर पर हाथ फेरने लगी।

''अपने मोर्चे पर जाओ जूही। इस बार तुम दुश्मनों के ऐसे छक्के छुड़ाना ताकि वे याद रखें।'' रानी ने कहा।

''जय हो महारानी की।'' जूही अपना हाथ ऊपर उठाते हुए बोली—''अब कुछ भी हो जाए, मैं महारानी के नाम पर कोई आंच नहीं आने दूंगी। आपकी शान को बनाए रखूंगी।''

इतने में रघुनाथ सिंह मुंदर से मिला।

वह मुंदर के कान में बोला—''महारानी, आज अपनी आखिरी लड़ाई लड़ने जा रही हैं। इसलिए तुम एक क्षण के लिए भी उनका साथ मत छोड़ना।''

''क्यों? आप हमारे साथ नहीं रहेंगे क्या?'' मुंदर बोली।

''मेरा रहना और न रहना महारानी के आदेश पर निर्भर करता है। फिर भी मैं आपके निकट रहने का प्रयास करूंगा।'' रघुनाथ सिंह ने मुंदर से कहा।

तभी अंग्रेजी तोपों के चलने की आवाज हवा में गूंजने लगी। इस आवाज को सुनकर जूही अपनी तोपों से दुश्मनों पर आग बरसाने लगी।

उस समय दिन चढ़ आया था। दिन के प्रकाश में रानी का चेहरा सोने की तरह चमक रहा था। उनके गले में मोतियों की माला अपना अलग रूप दिखा रही थी। इतने में रानी अपनी दोधारी तलवार निकालकर मोर्चे पर डट गईं।

पिछली हार के चलते अंग्रेजी सेना में चिंता की लहर दौड़ गई थी। इसलिए उसकी सेना के दस्ते बीहड़ के जंगलों में छुप गए, लेकिन उनके सवारों पर रानी ने लगातार हमले किए। रानी का हौसला देखकर अंग्रेजी नायक थर-थर कांपने लगे। समय बीतता गया मगर अंग्रेजी सैनिक अपने इरादे में कामयाब न हो सके।

समय ने करवट बदली। अंग्रेजी सेना ने राव साहब के दो मोर्चे पर अपना कब्जा कर लिया। राव साहब की पैदल सेना रानी साहिबा के पीछे चल रही थी। इसलिए रानी ने पैदल सेना को एक मोर्चे पर तैनात कर दिया और वे आगे बढ़ गईं। इसी बीच अंग्रेजी सैनिकों ने जूही पर हमला कर दिया। इस पर जूही ने भी हिम्मत दिखाते हुए तलवार से दुश्मनों पर वार किया। मगर उसका वार खाली गया और दुश्मनों ने उसे आखिरी सांस लेने पर मजबूर कर दिया।

उसकी मृत्यु का समाचार पाकर रानी ने जूही के मोर्चे पर दूसरा आदमी तैनात कर दिया। तभी जनरल के ब्रिगेडियर ने अपनी छुपी सेना को बाहर निकाला और रानी की ओर बढ़ा। ऐसे में लाल कुर्ती के सवारों ने पराक्रम दिखाते हुए रानी की सुरक्षा करने का अथक प्रयास किया। वे दुश्मनों से कई घंटों तक लड़ते रहे। इसी बीच रानी अपने मोर्चें की शेष सेना से मिलने के लिए पश्चिम दिशा की ओर मुड़ीं, परंतु हमलावर उनके सामने आ खड़े हुए। इस स्थिति में रानी ने घोड़े

की लगाम अपने दांतों तले दबाई और दोनों हाथों से तलवार चलाती हुई आगे बढ़ गईं, लेकिन अंग्रेजी सैनिकों ने रानी और उनके साथियों को एक घेरे में ले लिया। फिर भी वह तलवार चलाती हुई रास्ता बनाती चली गईं। पर उनके साथियों की संख्या अब बहुत कम रह गई थी। अंग्रेजों ने उनके अधिकांश साथियों को मार गिराया था।

दुश्मन के पैदल सैनिक रानी के पीछे लगे हुए थे।

मूक बना कालचक्र सब कुछ देख रहा था।

विधि का विधान आज हमेशा की तरह फिर सच होने जा रहा था। अचानक दुश्मन के एक सैनिक ने रानी के पेट में वार किया। उनके पेट से खून बहने लगा। उसी समय रानी ने रघुनाथ सिंह को आवाज लगाई।

''रघुनाथ सिंह! दुश्मन मेरे शरीर को छूने न पाएं।''

रानी ने आगे बढ़कर दुश्मन के कई सैनिकों को अपनी तलवार से गाजर-मूली की तरह काट दिया। तभी उनका सरदार गुल मुहम्मद उनके करीब आया। उसी समय अंग्रेज सैनिक ने एक गोली दागी। वह गोली रानी की बाईं जांघ पर आकर लगी। गोली लगने के बाद भी रानी ने एक अंग्रेज सिपाही को मार गिराया और आगे बढ़ीं।

जो अंग्रेज सैनिक रानी के पीछे पड़ा था, उसके हाथ में एक तलवार थी, यही तलवार रानी को मारने के लिए बार-बार उठ रही थी।

इसे रोकने के लिए गुल मोहम्मद जैसे ही आगे बढ़ा। वैसे ही उस अंग्रेज सिपाही ने तलवार से रानी के सिर पर वार किया।

फिर गुल मोहम्मद ने उस अंग्रेज के चार टुकड़े कर दिए। मगर वह झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को बचा न सका, क्योंकि रानी के सिर का दायां हिस्सा कट चुका था। वे इस मायारूपी दुनिया से हमेशा के लिए जा चुकी थीं।

रानी को मृत देखकर गुल मोहम्मद खून के आंसू रो रहा था। जैसे-जैसे रानी की मृत्यु का दुखद समाचार देश में फैला, वैसे-वैसे लोग रानी के लिए फफक कर रो पड़े। झांसी की जनता तो उस समय पागल हो गई थी, जैसे उसका सब कुछ लुट गया हो। आज उनके साथ सिर्फ रानी की यादें शेष रह गई थीं और कुछ नहीं।

आज महारानी लक्ष्मीबाई हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी जीवनगाथा भारत की लाखों-करोड़ों महिलाओं को प्रेरणा प्रदान करती है। हम ऐसी वीरांगना को शत्-शत् प्रणाम करते हैं।

❑❑❑

देश और समाज के लिए सर्वस्व न्योछावर करने वाले महापुरुषों के जीवन पर आधारित प्रेरणादायक पुस्तकें

पढ़िए इन पुस्तकों को और जानिए कि कैसे बना जाता है—
मानव से महामानव और एक सामान्य व्यक्ति से महापुरुष

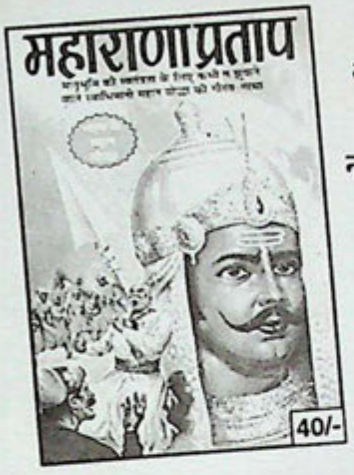

जननी जने तो भक्तजन
या दाता या सूर।
नहीं तो जननी बांझ रहे,
काहे गंवाये नूर॥

❒ महाराणा प्रताप	40.00	❒ नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	40.00
❒ स्वामी दयानन्द सरस्वती	40.00	❒ टीपू सुलतान	40.00
❒ स्वामी विवेकानन्द	40.00	❒ मदर टेरेसा	40.00
❒ रामकृष्ण परमहंस	40.00	❒ राजा राममोहन राय	40.00
❒ स्वामी रामतीर्थ	40.00	❒ डॉ. भीमराव अम्बेडकर	40.00
❒ शंहीदे आजम भगत सिंह	40.00	❒ सरदार वल्लभभाई पटेल	40.00
❒ चन्द्रशेखर आजाद	40.00	❒ लालबहादुर शास्त्री	40.00
❒ झांसी की रानी लक्ष्मीबाई	40.00	❒ इंदिरा गांधी	40.00
❒ डॉ. केशवराव हेडगेवार	40.00	❒ राजीव गांधी	40.00
❒ छत्रपति वीर शिवाजी	40.00	❒ लाला लाजपत राय	40.00
❒ वीर सावरकर	40.00	❒ बाल गंगाधर तिलक	40.00

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

मनोज पब्लिकेशन्स, 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546

बाल कथा साहित्य

मानव सभ्यता को सही व नई दिशा

❑ बच्चों की सर्वश्रेष्ठ कहानियां	50.00	❑ अलादीन का जादुई चिराग	40.00
❑ बच्चों के सर्वश्रेष्ठ गीत	40.00	❑ गुलिवर की यात्राएं	30.00
❑ किस्सा तोता-मैना	40.00	❑ मि. तीसमारखां	30.00
❑ सिंहासन बत्तीसी	40.00	❑ सिंदबाद की यात्राएं	30.00
❑ वेदों की कथाएं	50.00	❑ 551 रोचक तथ्य	40.00
❑ पुराणों की कथाएं	50.00	❑ मैजिक ट्रिक्स	40.00
❑ किस्सा हातिमताई	40.00	❑ 121 दिमागी कसरतें	40.00

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

मनोज पब्लिकेशन्स, 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084

फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546

समय की रफ्तार के साथ कदम मिलाने के लिए

कम्प्यूटर जिज्ञासुओं के लिए विशेष रूप से तैयार कम्प्यूटर पुस्तकें

• स्क्रीन की यथारूप प्रस्तुति • सिलसिलेवार जानकारी • सरल भाषा • स्पष्ट निर्देश

❒ ऑफिस 2000	150.00	❒ पेजमेकर (वर्जन 5, 6, सहित)	100.00
❒ 10 इन 1 कम्प्यूटर कोर्स	130.00	❒ मल्टीमिडिया	100.00
❒ 'ओ' लेवल कम्प्यूटर कोर्स	120.00	❒ कोरल ड्रा स्वयं सीखें (वर्जन 5 व 8-0 सहित)	100.00
❒ कम्प्यूटर रिपेअर गाइड (संपूर्ण रंगीन)	120.00	❒ विंडोज 98	100.00
❒ इंटरनेट गाइड	120.00	❒ फॉक्स प्रो	100.00
❒ ई-कामर्स	100.00	❒ कम्प्यूटर डी.टी.पी. कोर्स	100.00
❒ C++ प्रोग्रामिंग कोर्स	100.00	❒ 10 IN 1 COMPUTER COURSE	130.00
❒ कम्प्यूटर द्वारा एकाउन्टैंसी	120.00	❒ INTERNET GUIDE	120.00
❒ कम्प्यूटर कोर्स फॉर ऑफिस सेक्रेटरीज	100.00	❒ Corel Draw 8	80.00
		❒ COMPUTER D.T.P. COURSE	80.00

Specially for Children

• A SET OF SIX BOOKS • FULLY COLOURED

❒ **Play 'n' Learn Computers** (Part 1 to 6) 50.00

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

मनोज पब्लिकेशन्स, 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084

फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546

बाल कथा साहित्य

मानव सभ्यता को सही व नई दिशा

❒ बच्चों की सर्वश्रेष्ठ कहानियां	50.00	❒ अलादीन का जादुई चिराग	40.00
❒ बच्चों के सर्वश्रेष्ठ गीत	40.00	❒ गुलिवर की यात्राएं	30.00
❒ किस्सा तोता-मैना	40.00	❒ मि. तीसमारखां	30.00
❒ सिंहासन बत्तीसी	40.00	❒ सिंदबाद की यात्राएं	30.00
❒ वेदों की कथाएं	50.00	❒ 551 रोचक तथ्य	40.00
❒ पुराणों की कथाएं	50.00	❒ मैजिक ट्रिक्स	40.00
❒ किस्सा हातिमताई	40.00	❒ 121 दिमागी कसरतें	40.00

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

मनोज पब्लिकेशन्स, 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084

फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546

समय की रफ्तार के साथ कदम मिलाने के लिए

कम्प्यूटर जिज्ञासुओं के लिए विशेष रूप से तैयार कम्प्यूटर पुस्तकें

• स्क्रीन की यथारूप प्रस्तुति • सिलसिलेवार जानकारी • सरल भाषा • स्पष्ट निर्देश

❒ ऑफिस 2000	150.00	❒ पेजमेकर (वर्जन 5, 6, सहित)	100.00
❒ 10 इन 1 कम्प्यूटर कोर्स	130.00	❒ मल्टीमिडिया	100.00
❒ 'ओ' लेवल कम्प्यूटर कोर्स	120.00	❒ कोरल ड्रा स्वयं सीखें (वर्जन 5 व 8-0 सहित)	100.00
❒ कम्प्यूटर रिपेअर गाइड (संपूर्ण रंगीन)	120.00	❒ विंडोज 98	100.00
❒ इंटरनेट गाइड	120.00	❒ फॉक्स प्रो	100.00
❒ ई-कामर्स	100.00	❒ कम्प्यूटर डी.टी.पी. कोर्स	100.00
❒ C++ प्रोग्रामिंग कोर्स	100.00	❒ 10 IN 1 COMPUTER COURSE	130.00
❒ कम्प्यूटर द्वारा एकाउन्टैंसी	120.00	❒ INTERNET GUIDE	120.00
❒ कम्प्यूटर कोर्स फॉर ऑफिस सेक्रेटरीज	100.00	❒ Corel Draw 8	80.00

❒ COMPUTER D.T.P. COURSE 80.00

Specially for Children

• A SET OF SIX BOOKS • FULLY COLOURED

❒ **Play 'n' Learn Computers** (Part 1 to 6) 50.00

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

मनोज पब्लिकेशन्स, 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084

फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546

हॉबी एवं पर्यटन

- ☐ 11 दिन में हारमोनियम बजाना सीखिए (बड़े साइज में) 60.00
- ☐ बागवानी कैसे करें (बड़े साइज में) 120.00
- ☐ 151 स्वर लिपियां 60.00
- ☐ 11 दिन में गिटार बजाना सीखिए (बड़े साइज में) 60.00
- ☐ यूरोप की सैर 60.00
- ☐ डॉग केअर एण्ड ट्रेनिंग 60.00
- ☐ पर्यटन के मनोरम स्थल 60.00

स्पोर्ट्स

- ☐ भारत वन-डे इन्टरनेशनल क्रिकेट रिकार्ड्स 50.00
- ☐ क्रिकेट खेलना सीखें 50.00
- ☐ तायक्वोंडो 40.00
- ☐ सेल्फ डिफेंस 50.00
- ☐ मार्शल आर्ट (जूडो, कराटे, कुंगफू) 40.00

सौन्दर्य

- ☐ हर्बल ब्यूटी एण्ड हेयर केअर (बड़े साइज में) 80.00
- ☐ हर्बल ब्यूटी एण्ड हेयर केअर (डिमाई साइज में) 60.00

नीचे दिए गए पते पर मनीऑर्डर द्वारा धनराशि भेजें। पुस्तकें रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेजी जाएंगी। वी.पी. द्वारा पुस्तकें नहीं भेजी जातीं। कोई भी चार पुस्तकें मंगाने पर डाक-व्यय की छूट!

मनोज पब्लिकेशन्स, 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546

प्रगति वाचनालय १३७७

झांसी की रानी
लक्ष्मीबाई

मनु था उसका नाम। लोग उसे छबीली भी कहते थे। जब वह घोड़े पर सवार होकर सरपट दौड़ती, तो उसे पकड़ पाना बड़ों-बड़ों के लिए मुश्किल हो जाता। उसकी तलवार की चमक, भाले का वार एवं तीर का निशाना इतना अचूक और सशक्त होता कि दूसरे के लिए संभल पाना, अपनी जान बचाना मुश्किल हो जाता।

झांसी की महारानी बनने पर उसने कसम खाई थी—''अपने जीते जी झांसी की शान पर आंच नहीं आने दूंगी!'' उसने अपनी कसम की आन रखी। मर गई, लेकिन न तो अंग्रेजों के आगे झुकी और न ही उसने अंग्रेजों को अपना शरीर छूने दिया।

बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मरदानी वह तो झांसी वाली रानी थी।

मनोज पब्लिकेशन्स

Rs. 40/-

W. Sawan Series